तिरुमल - तिरुपति देवस्थान की मास - पत्रिका

JAGADISH

पंचरत्नमाला का उद्घाटन

१, अक्तूबर, ७६ को विजयदशमी के पर्व दिन पर तिरुमल श्री बालाजी के मदिर में "श्री वेकटे-श्वर पचरत्नमाला" नामक लाग प्ले रिकार्ड का उद्घाटन किया गया। तिरुमल श्री बालाजी मदिर स्थित अन्नमाचार्य मंदिर में उत्सव का प्रारंभ हुआ।
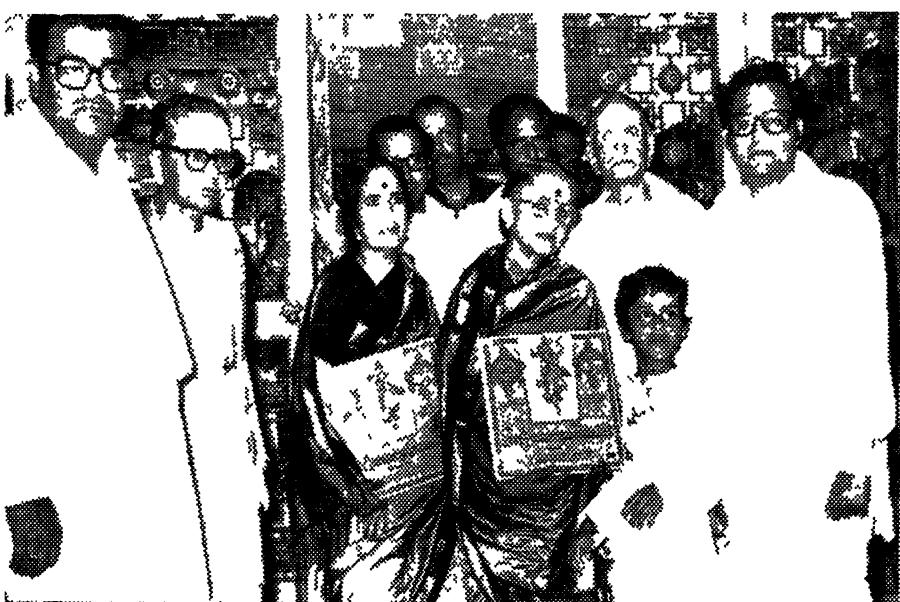
उक्त अवसर पर श्री चन्द्रमौलि रेड्डी जी, देवादाय शाखा के कमीशनर, डा० एन रमेशन, निर्वाहक मण्डली के अध्यक्ष, श्रीमती एम एस सुब्बुलक्ष्मी, प्रमुख गायनी; श्री पी वी.आर के प्रसादजी, देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी उपस्थित थे।

देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी. वी आर. के. प्रसाद जी मधुर सगीत गायनी श्रीमती एम एस. सुब्बुलक्ष्मी को सन्मान करते हुए।

(तीसरा कवर पृष्ट पर देखिए)

नन्हें मुन्हें प्यारे बच्चे
मुस्कुराते मुस्कुराने
आए हैं भगवान के प्रतिरूप
उज्ज्वल भविष्य के आशा दीप ॥

(चित्र श्री नरसिंहाराव, बापटला)

श्रीवेङ्कटेश्वरस्वामीजी का मन्दिर, तिरुमल.

२-११-७९ से २९-२-१९८० तक

दैनिक पूजा एवं दर्शन के कार्यक्रम

शनि, रवि, सोम तथा मंगलवार

प्रात	3-00	से	3-30	तक	सुप्रभात
	3-30	„	3-45	,	शुद्धि
„	3-45	„	4-30	„	तोमालसेवा
„	4-30	„	4-45	„	कोलव तथा पचागश्रवण
„	4-45		5-30	„	पहली अर्चना
,	5-30	„	6-00	„	पहलीघटी तथा सात्तुमोरै
„	6-00	,	12-00	„	सर्वदर्शन
दोपहर	12-00	„	1-00	„	दूसरी अर्चना
„	1-00	रात	9-00	„	. सर्वदर्शन
„	1-00	„	6-00	„	.. कल्याणोत्सव आदि
रात	9-00	„	1-00	„	... शुद्धि तथा रात का कैंकर्य
„	10-00	„	10-30	„	शुद्धि
			10-30	„	.. एकान्त सेवा

बुधवार (सहस्र कलशाभिषेक)

प्रात.	3-00	से	3-30	तक	सुप्रभात
„	3-30	„	3-45	„	शुद्धि
„	3-45	„	4-30	„	. तोमाल सेवा
„	4-30	„	4-45	„	.. कोलुवु तथा पचाग श्रवण
,	4-45	„	5-30	„	.. पहली अर्चना
„	5-30	„	6-00	„	. पहलीघटी तथा सात्तुमोरै
„	6-00	„	8-00	„	.. सहस्र कलशाभिषेक
„	8-00	रात	9-00	„	सर्वदर्शन
दोपहर	1-00	„	6-00	„	कल्याणोत्सव आदि
रात	9-00	„	10-00	„	.. शुद्धि तथा रात का कैंकर्य
„	10-00	„	10-30	„	.. शुद्धि
		„	10-30	„	एकात सेवा

गुरुवार (तिरुप्पावडा)

प्रातः	3-00	से	3-30	तक	... सुप्रभात
„	3-30	„	3-45	„	.. शुद्धि
प्रात	3-45	से	4-30	तक	तोमाल सेवा
„	4-30	„	4-45	„	. कोलुवु, तथा पंचांगश्रवण
„	4-45	„	5-30	„	.. पहली अर्चना
„	5-30	„	6-00	„	. पहली घटी, बाली तथा सात्तुमोरै
„	6-00	„	8-00	„	. सर्डलिपु, दूसरी अर्चना तिरुप्पावडा, इत्यादि
„	8-00	रात	6-00	„	.. सर्वदर्शन
दोपहर	1-00	रात	6-00	„	कल्याणोत्सव आदि
रात	6 00	„	8-00	„	रात का कैंकर्य, घटी, पूलगि समर्पण, शुद्धि इत्यादि
„	8-00	„	10-00	„	. पूलगि सर्वदर्शन
„	10-00	„	10-30	„	... शुद्धि
		„	10-30	„	.. एकात सेवा

शुक्रवार (अभिषेक)

प्रातः	3-00	से	3-30	तक	सुप्रभात
„	3-30	„	5-00	„	. सर्डलिपु का नित्य कैंकर्य (एकात)
„	5-00	„	7-00	„	. अभिषेक (अर्जित)
„	7-00	„	8-30	„	समर्पण
„	8-30	„	9-30	„	तोमाल सेवा अर्चना, घंटी बालि तथा सात्तुमोरै
„	9-30	„	10-00	„	. दूसरी घटी, सात्तुमोरै
„	10-00	रात	9-00	„	.. सर्वदर्शन
दोपहर	1-00	„	6-00	„	.. कल्याणोत्सव आदि
रात	9-00	„	10-00	„	... शुद्धि, रात का कैंकय
„	10-00	„	10-30	„	... शुद्धि
		„	10-30	„	.. एकात सेवा

सूचना. १. उक्त कार्यक्रम किसी त्योहार तथा विशेष उत्सव दिनो के अवसर पर समयानुकूल बदल दिया जायगा। २. सुप्रभात दर्शन केलिए सिर्फ रु २५/- टिकेटवालो को ही अनुमति मिलेगी। ३. रु २५/- के टिकेट तिरुमल में तथा आन्ध्रा बैंक के सभी शाखाओं में मिलेगी। ४. सेवानंतर टिकेट को रद्द कर दिया गया। ५. प्रत्येक दर्शन के टिकेटवालो को पहले के जैसे ध्वजस्थभ के पास से नही, बल्कि महाद्वार से क्यू में मिलाया जायगा। ६. रु. २००/- के आमंत्रणोत्सव टिकेट पर दो ही व्यक्तियो को भेजा जायगा। ७. अर्चना, तोमाल सेवा, एकातसेवा में दर्शनानंतर टिकेट या रु. २५/- का टिकेट नही बेचा जायेगा।

—पेश्कार, श्री बालाजी का मंदिर, तिरुमल.

सप्तगिरि
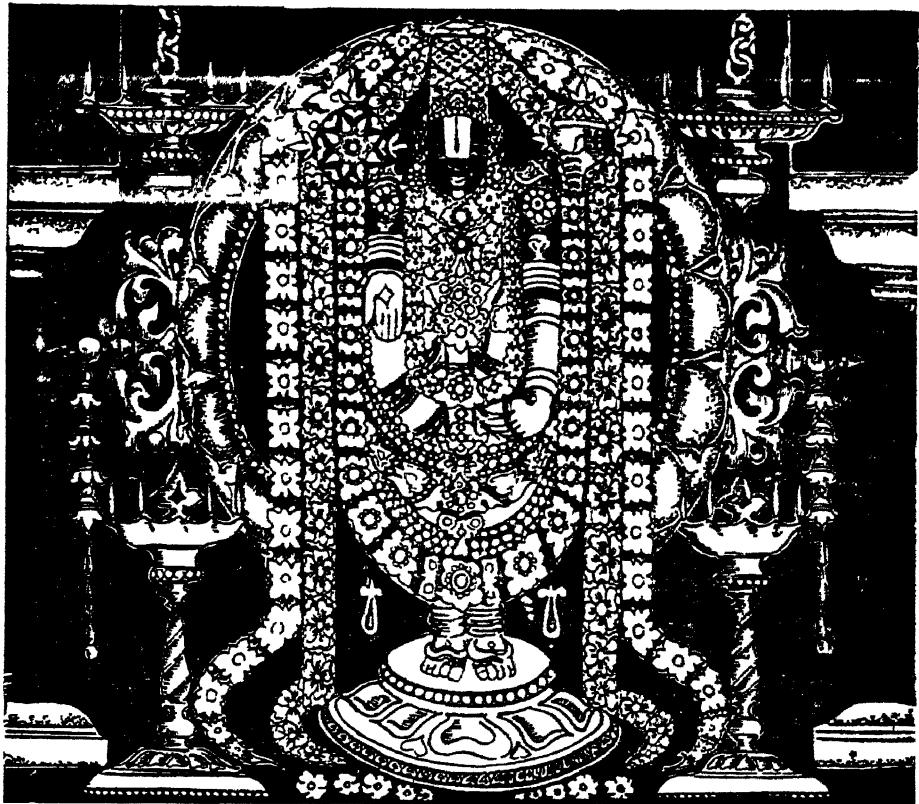
नवंबर १९७९ वर्ष १० अंक ६

एक प्रति .... रु. ०-५०
वार्षिक चंदा .... रु. ६-००

गौरव सपादक
श्री पी. वी आर. के. प्रसाद
आइ. ए यस्,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति. ति. दे. तिरुपति.
दूरवाणी २३२२

सपादक, प्रकाशक
के. सुब्बाराव, एम. ए,
तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति.
दूरवाणी २२५४.

मुद्रक
एम्. विजयकुमाररेड्डी,
मेनेजर, टी टी. डी. प्रेस्, तिरुपति.
दूरवाणी २३४०.

अन्य विवरण के लिये
EDITOR
'Sapthagiri'
T. T. D Press Compound,
TIRUPATI-517501.

मुख चित्र : "बच्चे की मुस्कान – राष्ट्र की शान"

"आ जा बचपन । एक बारफिर ।
दे दे अपनी निर्मल शांति ।। "

बचपन! मानव जीवन का स्वर्णिम काल । शिशु माता - पिताओ के स्नेह तथा श्रद्धा से सात्विक गुण सीखता है । चिंता रहित, निर्भय व स्वच्छद भाव से काम करने लगता है ।

ऐसे सुंदर पारिवारिक वातावरण में पलने वाले बच्चों का भविष्य उज्ज्वल होता है । "आज के बच्चे, कल के नागरिक है"—इसलिए उनको विनयशीलता, अनुशासन आदि गुण सिखाने चाहिए । अगर इनका लोप हो तो, उनका जीवन नरक तुल्य हो जाता है । उसके दिमाग पर बचपन की स्मृतियाँ अमिट रहती हैं । हमारी पौराणिक कहानियों का अवलोकन करें तो राम को बचपन में विनयशील तथा अनुशासन से भरा हुआ देख सकते हैं, जो बाद में मर्यादा पुरुषोत्तम राम कहलाता है । कृष्ण को देखें तो, जिस पर बचपन में माता - पिता के श्रद्धा व भय नही होते और वात्सल्य की माता कुछ अधिक होने के कारण, वह नटखट दिखाई पडता है । और फिर कर्ण के अशांतिमय जीवन को देखिए, जो माता - पिता के प्रेम से वंचित है, जिसकी छाप दिमाग पर अटल रहता है. बडे होने के बाद समाज के प्रति प्रतीकार की भावना बढ जाती है और घोर महाभारत युद्ध का कारण भी बन जाता है । वीर छत्रपति शिवाजी को देखिए, जिसने बचपन में अपनी माता से ही वीर पुरुषों की कहानियों को सुना और अपने कर्तव्य को समझ लिया तथा देश को स्वतंत्र करने का प्रयत्न किया । कहने का मतलब यह है कि बच्चे भावी नागरिक होते हैं और देश का भविष्य भी उनके हाथों में है । इसलिए माता - पिता को अधिक श्रद्धा दिखाकर उनको सुखमय जीवन प्रदान करना चाहिए ।

ऊपर कहे अनुसार हमारे गत इतिहास में जो भूलें मौजूद है, उन्हें दुबारा नहीं करना चाहिए । फिर यह तो अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष है, दुनिया भर शिशु सक्षेम की चेतना जाग्रत हुई । उनके सुख जीवन के लिए विविध प्रणालियाँ बन रही हैं । बच्चों के कष्टों को दूर करने तथा उनको सुख व शातिमय जीवन प्रदान करके, उनके शारीरक व मानसिक विकास के प्रति सभी लोगों को उत्सुकता दिखाना जरूरी है । क्योंकि इन्हीं में से राम, कृष्ण, शिवाजी आदि महान पुरुष जन्म लेकर देश की उन्नति में प्रमुख भाग ले सकते हैं । इस अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के अवसर पर उन चिरंजीवों को शुभाशीर्वाद देने के लिए सप्तगिरीश्वर श्री बालाजी से यह प्रार्थना करते हैं कि उनका जीवन सुखमय हो।

कुन्ती का धर्म-प्रेम और त्याग

पाँचो पाण्डवो को कुन्तीदेवी सहित जलाकर मार डालने के लिए दुर्योधन ने वारणावत नामक स्थान में एक चपडे का महल बनवाया और अन्धे राजा धृतराष्ट्र को समझाकर उनके द्वारा युधिष्ठर को यह आज्ञा दिया कि तुम लोग वहाँ जाकर कुछ दिन रहो और वहाँ रहकर दानपुण्य करके पुण्य संचय करो।

दुर्योधन ने अपनी चाण्डाल-चौकडी में यह निश्चय किया था कि पाण्डवो के वहाँ रहने पर किसी दिन रात्रि के समय आग लगा दी जायगी और चपडे का महल तुरंत पाण्डवों सहित भस्म हो जायगा। इस तरह दुष्ट दुर्योधन ने सोचा। मगर धृतराष्ट्र को इस बुरी नीयत का पता नहीं था। परन्तु किसी तरह विदुर को पता लग गया और विदुर ने उनके वहाँ से बच निकलने के लिए अंदर-ही अंदर एक सुरंग बनवा दिया तथा सांकेतिक भाषा में युधिष्ठिर को सारा रहस्य तथा बच निकलने का उपाय समझा दिया।

पाण्डव लोग वहाँ से बच निकले और अपने को छिपाकर एकचक्रा नगरी में एक ब्राह्मण के घर जाकर रहने लगे। उस नागरी में बक नामक एक बलवान् राक्षस रहता था। उसने ऐसा नियम बना रखा था कि नगर के प्रत्येक

कु. डी. एस. जयलक्ष्मी, बी. ए.,
बेंगलूर.

घर से रोज बारी-बारी से एक आदमी उसके लिए विविध भोजनसामग्री लेकर उसके पास जाय। उसने अन्य सामग्रियों के साथ उस आदमी को भी खा जाता था। जिस ब्राह्मण के घर में पाण्डव रहे थे, एन दिन उसकी बारी आ गयी। ब्राह्मण के घर कुहराम मच गया। ब्राह्मण, उसकी पत्नी, कन्या और पुत्र अपने अपने प्राण देकर एक दूसरे को बचाने का आग्रह करने लगे। उस दिन धर्मराज आदि चारो भाई तो भिक्षा के लिए बाहर गये थे। डेरे पर कुन्ती देवी और भीमसेन थे। कुन्तीदेवी ने सारी बातें सुना तो उसकी हृदय दया से भर गया। उन्होंने जाकर ब्राह्मण-परिवार से हँसकर कहा—"महाराज! आप लोग रोते क्यों हैं? कुछ भी चिंता न कीजिए। हमलोग आपके आश्रय में रहते हैं। मेरे पाँच लडके है, उनमे से मैं एक लडके को भोजन-सामग्री देकर राक्षस के पास भेज दूँगी।"

ब्राह्मण ने कहा—माता! ऐसा कैसे हो सकता है? आप हमारे अतिथि हैं। अपने प्राण बचाने के लिए हम अतिथि का प्राण लेना ऐसा अधर्म हमसे कभी नही हो सकता।

कुन्ती देवी ने समझाकर कहा—पण्डितजी, आप जरा भी चिन्ता न कीजिए। मेरा लडका भीम बडा बलवान है। उसने अब तक कितने ही राक्षसों को मारा है। वह अवश्य इस राक्षस को भी मार देगा। ओर मान लीजियें, एक समय वह न भी मार सका तो क्या होगा। मेरे पाँच में चार तो बच ही रहेंगें। हमलोग सब एक साथ रहकर एक ही परिवार के से हो गये है। आप वृद्ध है, वह जवान है। फिर हम आपके आश्रय में रहते है। ऐसी अवस्था में वृद्ध और पूजनीय होकर भी राक्षस के मुंह में जायं और मेरा लडका जवान और बलवान् होकर भी घर में मुँह छिपाकर बैठा रहे, यह कैसे हो सकता है?

ब्राह्मण-परिवार ने किसी तरह भी जब कुन्तीदेवी का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया, तब कुन्ती देवी ने उन्हें हर तरह से यह विश्वास दिलाया कि भीमसेन अवश्य ही राक्षस को मार कर आवेगा और कहा कि 'भूदेव! आप यदि नहीं मानेंगे तो भीमसेन आपको बलपूर्वक रोक कर चला जायगा। मैं उसे अवश्य भेजूंगी और आप उसे रोक नहीं सकेंगे।'

तब लाचार होकर ब्राह्मण नें कुन्ती देवी का अनुरोध स्वीकार किया। माता की आज्ञा पाकर भीमसेन ने बडी प्रसन्नता से जाने को तैयार हो गये। इसी बीच युधिष्ठिर आदि चारों भाई लौटकर घर पहुँचे। युधिष्ठिर ने जब माता की बात सुनी तो उन्हें बडा दुःख हुआ और उन्होने माता को इसके लिये उलाहना दिया। इस पर कुन्ती देवी बोली—"युधिष्ठिर! तू धर्मात्मा होकर भी इस प्रकार की बातें कैसे कह रहे हो? भीम के बल का तुझको भलीभाँति पता है, वह राक्षस को मारकर ही आवेगा; मगर कदाचित् ऐसा न भी हो, तो इस समय भीमसेन को भेजना ही क्या धर्म नहीं हैं? ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—किसी पर भी विपत्ती आवे तो बलवान् क्षत्रियों का धर्म है कि अपने प्राणों को संकट में डालकर उसकी रक्षा करना। ये प्रथम तो ब्राह्मण है, दूसरे निर्बल हैं और तीसरे हम लोगों के आश्रयदाता हैं। आश्रय देनेवाला का बदला चुकाना तो मनुष्यमात्र का धर्म होता है। इसलिए मैंनें भीमसेन को यह कार्य करने केलिए जान-बूझकर सौंप दिया। क्षत्रिय-वीर नारियो ने ऐसे ही अवसरों के लिए पुत्र को जन्म दिया करती हैं। तू इस महान् कार्य में क्यों बाधा देना चाहता हो?

धर्मराज युधिष्ठिर ने माता की धर्मसम्मत वाणी सुनकर लज्जित हो गये और बोले—माताजी, मेरी ही भूल थी। आपने धर्म के लिए भीमसेन को यह काम सौंपकर बहुत अच्छा किया। आपके पुण्य और शुभाशीर्वाद से भीम अवश्य ही राक्षस को मारकर लौटेगा।

फिर माता और बडे भाई की आज्ञा और आशीर्वाद लेकर भीमसेन बडे ही उत्साह से राक्षस के पास गये और उसे मारकर ही लौटे। इस तरह कुन्ती देवी का धर्म प्रेम और त्याग था। ★

श्री गोविंदराज स्वामी का मंदिर, तिरुपति.

दैनिक-कार्यक्रम

प्रातः	5-00 से 5-30 तक	—	सुप्रभातम्
,,	5-30 ,, 7-00 ,,	—	सर्वदर्शन
,,	7-00 ,, 7-30 ,,	—	शुद्धि
,,	7-30 ,, 8-00 ,,	—	तोमाल सेवा
,,	8-00 ,, 8-30 ,,	—	अर्चना
,,	8-30 ,, 9-00 ,,	—	पहली घटी तथा सात्तुमुरै
,,	9-00 से मध्याह्न 12- 0 तक	—	सर्वदर्शनम्
मध्याह्न	12-30 से 1-00 तक	—	दूसरी घटी
,,	1-00 से शाम 6-00 तक	—	सर्वदर्शनम्
,,	6-00 से 7-00 तक	-	रात के कैंकर्य
,,	7-00 ,, 8-45 ,,	—	सर्वदर्शनम्
,,	9-00 बजे	—	एकांत सेवा ।

अर्जित सेवाओं की दरें

तोमाल सेवा	रु ४-००
सहस्र नामाचना	रु ४-००
एकात सेवा	रु. ४-००
हारती	रु १-००
विशेष दर्शन	रु २-००

(सिर्फ सर्व दर्शन के समय पर ही प्रवेश)

सूचनाः- एक ही व्यक्ति को अनुमति दी जाती है ।

श्री गोविंदराज स्वामी के मंदिर से सम्बन्धित अन्य मंदिरों के अर्जित सेवाओं की दरें

१) श्री पार्थसारथी स्वामी का मदिर
२) श्री वेंकटेश्वर स्वामी का मदिर
३) श्री आण्डाल का मदिर
४) श्री पुडरीकवल्लि तायारु का मदिर
५) श्री आजनेय स्वामी का मदिर —सन्निधि वीथी के पास
६) श्री सजीवराय स्वामी का मदिर —श्री हथीराम जी मठ

अर्चना. रु. ०-७५.
हारती. रु. ०-२५.

अर्जित वाहन

१)	तिरुचि उत्सव	—	रु ६३-००
२)	बडा शेषवाहन	—	रु ६३-००
३)	छोटा शेष वाहन	—	रु. ३३-००
४)	गरुड वाहन	—	रु. ३३-००
५)	हनुमन्त वाहन	—	रु ३३-००
६)	हस वाहन	—	रु ३३-००

भगवान को प्रसाद (भोग) समर्पण

१)	शीरा	—	रु, १५५-००
२)	बघार भात	—	रु. ५०-००
३)	दही भात	—	रु. ४०-००
४)	पोगलि	—	रु ५५-००
५)	शक्कर पोगलि	—	रु. ६५-००
६)	शक्कर भात	—	रु. ८५-००
७)	केसरी भात	—	रु ९०-००
८)	१/४सोला दोसै	—	रु. ३५-००

श्री कृष्ण दर्शन

सुगन्धित कुसमों से सुरभित पवन
जब फैलती दिशाओं में
मधुकर वृन्द उन पुष्पों की खोज में
जहाँ से गंध आई, मँडराते हो दिवाने ॥

अहा ! कैसी मधुर गंध
कैसे पाऊँ उसे ?
इसी धुन में उडते रहते
अविश्रम निशि-दिन वे ॥

कृष्ण की मुरली की मधुर ध्वनि सुनकर
गो, गोप, गोपियाँ दौड पड़ती खोज में उनके
कदम्ब के पेड के नीचे मुरलीधर दर्शन देते उन्हें
प्रफुल्लित हो जाते सभी, मन मोहनी छवि देख कर ॥

श्याम वर्ण उनका सुन्दर सलोना है
मोर मुकुट सिर ऊपर सोहाना है
बाँकी चितवन नयन रतनारे मन मोहते है
भृकुट विलास मृदुल हास, कच घूँघर वाले हैं ॥

उर पर वैजयन्ती माला रहती है
मनोहर पीताम्बर की कछनी काछे हुए है
तिरछा चरण धरती पर धरा है
मुख मंडल की प्रभा मन को उल्लासित कर रही है ॥

सुधा सिंचित अधर पर मुरली राजती है
छिद्रों पर उसके उँगलियाँ नृत्य करती हैं
श्वास संचारित होती तब मधुरतान तरंगित होती है
कर्ण-पुट इस मधुर नाद से गूँज उठते हैं ॥

सुनकर मुरली की तान
स्तब्ध हो जाता परिवेश सारा
गौएँ चारा चरना भूल जाती
गोपियाँ गोप सारे नाच उठते ॥

अहा ! कैसा सुहावना दृश्य है यह
चर अचर सब ही
इस मुरली ध्वनि मे प्रभावित हो
अपना-अपना काज छोड देते ॥

यमुना ने भी अपना प्रवाह त्यागा
कृष्ण-मणि ने आकर्षित कर लिया उसे ओर अपनी
जिस तरह नीलांबुद आकर्षित करता
मयूर को ओर अपनी ॥

मारग दर्शाया कृष्ण ने प्रेम पथ का
भोले भाले जनों के उद्धार का
दिया उपदेश अर्जुन को सन्मार्ग का
सभी जनों के तर्क को समाधान करने का ॥

भक्त जिस योग्य होता
उसे दर्शाते भगवान पंथ वैसा
करुणा सागर भगवान की लीलाएँ मधुर
देख कर सुनकर आनन्दित होते जन सकल ॥

भक्तजन की प्रार्थना प्रभु से है यही
घन श्याम के दर्शन होते रहें उन्हें सदा ही
जपता रहे हरि नाम निशि-दिन दास तेरा
हरि 'ॐ' कह कर प्राण निकले तन से मेरा ॥

श्री जगमोहन चतुर्वेदी, हैदराबाद.

सप्तगिरि

तिरुपति तिरुमल देवस्थान ने आर्य धर्म प्रचार तथा देवस्थान कार्यकलापो को सब लोगो को सुस्पष्ट करने के लिए सप्तगिरि मास पत्रिका को केवल हिन्दी में ही प्रत्येक रूप से प्रचुरण करने का निश्चय किया ।

सब पंडित, कलाकार इत्यादि महोदयों से यह विज्ञापन है कि वे धार्मिक, आध्यात्मिक, साहित्यिक सबधी प्रमुख लेख और प्रसिद्ध धार्मिक क्षेत्र, प्रमुख पुण्य क्षेत्रो के सुंदर चित्र सप्तगिरि में प्रचुरण के लिए भेज सकते है ।

"सप्तगिरि" मासिक पत्रिका में हिन्दू धार्मिक सस्थाओ के देवालयो और तत्सम्बद्ध पुस्तक विक्रेता प्रतिष्ठानो से प्रकाशनार्थ विज्ञापन स्वीकार किये जाऐगा । दर निम्नलिखित है ।

प्रति विज्ञापन

अन्दर के पृष्ठ	पूरा पेज	रु 80
„	आधा पेज	„ 50
„	चौथाई पेज	„ 30
...वर पेज (चतुर्थ)	एक रंग में ..	„ 200
„	दो रगो में ...	„ 250
„	तीन रगों में .	„ 300

दूसरा व तीसरा कवर पृष्ठ

,	एक रग ...	„ 150
„	दो रंग .	„ 200
,	तिरंगा ...	„ 250
प्रथम पृष्ठ	...	„ 150
अन्तिम पृष्ठ	..	„ 110
वार्ता पृष्ठ के सम्मुख (पूरा पेज)		„ 100
„	आधा पेज	„ 60

सांकेतिक सूचनाएँ

स्क्रीन कवर पेज	80 से 100
भीतर के पेज	80

पेज परिमाण (ब्लैक)

पूरा पेज	24 सें मी × 19 सें मी
आधा पेज	12 सें मी. × 19 सें मी.
चौथाई पेज	6 से मी. × 19 से मी

नोट :— विज्ञापन से संबंधित समाचार तथा ब्लैक आदि सस्थाओ को ही देना पडेगा ।

१. चौथे कवर पेज के अतिरिक्त अन्यपृष्ठो के लिए ६ महीने का अग्रिम शुल्क जमाकर स्थान निश्चित करा लेने पर ऊपर दिये गये विज्ञापन शुल्कों पर १० प्रतिशत कमीशन दिया जायगा । १२ महीनो के लिए अग्रिम देनेवालो को १५ प्रतिशत कमीशन दिया जायगा ।

प्रत्येक प्रति : रु. ०--५०. वार्षिक चंदा : रु. ६--००.

२. सब प्रांतों में सप्तगिरि प्रतिनिधियों को 25% कमीशन दिया जायेगा । जिन प्रांतो में प्रतिनिधि नहीं होते वहाँ पर उत्सुक महोदय प्रतिनिधि बन सकते ।

३. अन्य विवरण सप्तगिरि के सपादक महोदय से प्राप्त कर सकते है ।

कार्यनिर्वहणाधिकारी,
तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति.

मोक्ष प्राप्ति के सुगम उपाय

श्री रमाकान्त पाण्डेय
कलकत्ता

सत्ययुग, त्रेता और द्वापर में हमारे पूर्वज मोक्ष की प्राप्ति के लिये कठोर तपस्या किया करते थे। किन्तु आज के कलियुग में हम अपने जीवन की दैनन्दिन समस्याओं के चक्रव्यूह में कुछ इस प्रकार फंसे रहते हैं कि हम मोक्ष की प्राप्ति के लिये अपने दैनन्दिन जीवन से दूर जाकर कुछ विशेष बात करने का न तो समय मिलता है और न फिर श्रांत-क्लांत तन-मन को कुछ विशेष काम करना अच्छा ही लगता है।

अत: आज के व्यस्ततम भौतिक-वादी युग में हमारा धार्मिक नारा होना चाहिए— "काम करते चलो, नाम जपते चलो। श्री कृष्ण, गोबिन्द, गोपाल भजते चलो।" इसका तात्पर्य यह है कि यदि हमें परमपिता परमेश्वर की पूजा-अर्चना करने, व्रत रखने, तीर्थाटन करने, धार्मिक ग्रंथो का अध्ययन-मनन करने, सत्संग करने आदि के लिये विशेष समय न मिलता हो तो हमें काम करते-करते ही जब नीरसता महसूस होने लगे, तब सत्-चित्-आनन्द परमपिता परमेश्वर के नाम का उच्चारण कर लेना चाहिए और फिर अपने काम में पूर्ववत लग जाना चाहिए।

इससे जहाँ एक ओर काम में सरसता आ जायेगी, वहीं दूसरी ओर मन को दैवी स्फूर्ति भी मिल जायेगी। काम में धार्मिक शुद्धता एवं पवित्रता का भी समावेश होगा जिससे जीविकोपार्जन के साधन भी शुद्ध होंगे। फिर जब हम शुद्ध एवं पवित्र साधना से जीविकोपार्जन करेंगे तब हमारे लोक के साथ-साथ परलोक भी अवश्य सुधरेगा। मोक्ष की प्राप्ति भी जरूर होगी।

इसके अतिरिक्त हम अपने जीवन के समस्त कर्म को ईश्वर प्रदत्त कर्म समझ कर करें और फिर उसे करते हुए बीच-बीच में घडी दो घडी समय निकाल कर ईश्वर का नाम ले लें तो निस्सन्देह हमें मोक्ष की प्राप्ति होगी। इस सन्दर्भ में एक कथा इस प्रकार है— एक दिन भक्त प्रवर नारदजी ने भगवान विष्णु के पास जाकर पूछा कि "भगवन्, मत्युलोक में आपका सबसे प्रियपात्र कौन है।"

इस पर भगवान ने मुस्कुराते हुए कहा— "अमुक गाँव का अमुक किसान"

नारदजी सोच रहे थे कि भगवान उन्हें ही अपना सबसे प्रियपात्र कह देंगे क्योंकि वे तो अहर्निश उन्हीं का नाम जपते रहते हैं और कोई दूसरा काम नहीं करते।

खैर वे भगवान द्वारा बनाए गाँव में गये और उन्होंने उस किसान के कार्यकलाप को देखा तो पाया कि उस किसान ने पूरे दिन में सिर्फ तीन ही बार भगवान का नाम लिया। पहली बार उस समय जब वह सोकर उठा, दूसरीबार उस समय जब वह हल-बैल लेकर खेत में काम करने के लिए चला और तीसरी बार रात में जब वह सोने लगा। नारदजी को आश्चर्य हुआ कि कोई आखिर भगवान का सिर्फ तीन ही बार नाम लेकर प्रियपात्र कैसे बन सकता है?

शंका समाधान के लिये वे पुनः सच्चिदानद आनंदकंद भगवान विष्णु के पास गये। अन्तर्यामी दयानिकेतन प्रभु ने झट एक तेल से भरा कटोरा नारदजी को देते हुए कहा कि-इसे लेकर पृथ्वी की परिक्रमा कर आओ

(शेष पृष्ठ ११ पर)

भक्त रामदास

– श्री के. एस. शंकरनारायण,
कल्पाक्कम्.

रहता गोपण्णा भद्राचल में,
रखता राम अपने मन में
करता तहसील का काम,
जपता रोज राम-नाम ।
भेजता कर नवाब को वसूल कर,
रखता विश्वास नवाब उस पर ।
मन्दिर था एक छोटा सा राम का,
निश्चय किया उसे बडा बनाने का ।
किया खर्च छः लाख रुपये इस में ।
किया इन्तजाम पूजा-पाठ का इस में ।
मिली खबर नवाब को जासूस से ।
नाराज हो गया वह बहुत उससे ।
दी आज्ञा उसे कैद करवाने की ।
ली न समझ भक्ति उसकी ।
गरजा नवाब, आज ही देना हमें कर ।
मिला जवाब. जल्दी दे दूँ वसूल कर ।
न मान ली उसकी बात ।
सोचा उसे विश्वासघात ।
सताया बहुत उसे जेल में डालकर,
पछताया नहीं जरा भी इस काम पर ।
रोया गोपण्णा पीडा से बहुत बार,
पुकारा उसने राम को बार-बार ।
पूछा सीता ने, क्यों इतना दुख गोपण्णा को?
बोले राम- 'पिछले जन्म में सताया पिंजरे में एक तोते को
आए जवान राम-लक्ष्मण रात को,
दिए रुपये छः लाख नवाब को ।
हम रामदास के दास-बोले खुशी से,
फिर अचानक ओझल हो गए उसकी दृष्टि से।
दौडा नवाब जल्दी जेल पर,
गिरा तुरन्त गोपण्णा के पैरों पर ।
माँगी माफी उसे मुक्त कर,
धो दिया आँसू से पैरों को पकडकर ।
गदगद हो गया गोपण्णा राम की लीला से,
धन्य समझा नवाब को राम के दर्शन से।
रहेगा अमर भक्त रामदास,
करेगा हमें भी रामदास

* * * * *

(पृष्ठ ९ का शेष)

और देखे इसका ध्यान रखना कि कटोर का एक बूंद भी तेल गिरने न पाये। नारदजी जब परिक्रमा कर वापस विष्णु के पास आये तब उन्होंने उनसे पूछा कि नारद बोलो, तुमने परिक्रमा करते समय कितनी बार मेरा नाम लिया? नारद जी ने दुख प्रकट करते हुए कहा कि भगवान, मे तो आपका नाम एक बार भी न ले सका परन्तु इससे क्या हुआ? काम तो आखिर मै आप का ही कर रहा था। इसपर भगवान ने कहा कि वह दूसरा भी अन्ततः मेरा ही काम करता है। यदि किसान अन्न न उपजाए तो लोग खाये क्या? फिर भी वह किसान मेरे काम को करते हुए दिन भर में तीन बार मेरा नाम लेता हैं। इसीलिये वह मेरा सबसे प्रिय पात्र है और देह त्याग के उपरांत वह मुझमें समूहित हो जाने अर्थात मोक्ष या कैवल्य प्राप्त करने का अधिकारी हैं।

इस कथा का सारंश यही है कि किसी व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति के लिए अपने जीविकोपार्जना के दैनिक कर्म से यदि अवकाश न मिले तो वह अपने शुद्धाचरण एवं शुद्ध हृदय से ईश्वर के दो चार-बार के नाम स्मरण से ही मोक्ष की प्राप्ति का अधिकारी बन जाता है।

जो निरन्तर ईश्वर का चिन्तन-मनन करना, उनके स्वरूप और गुणों को हृदयंगम करना, व्रतकरना, तीर्थाटन करना, दान-पुण्य करना, धार्मिक ग्रथों का अध्ययन-मनन करना, सत्संगति करना एवं ईश्वर की लीलाओं एवं संतों के सत्कर्मों की कथाओं का श्रवण करना मोक्ष की प्राप्ति में सदा सहायक हैं। *

श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामीजी का मंदिर
नारायणवनम्, [ति. ति. देवस्थान]

दैनिक-कार्यक्रम

१.	सुप्रभात	प्रातः	६-०० से	प्रातः	६-३० तक
२.	विश्वरूप सर्व दर्शन	,,	६-३० ,,	,,	८-३० ,,
३.	तोमालसेवा	,,	८-३० ,	,,	९-०० ,,
४	कोलुवु & अर्चना	,,	९-०० ,,	,,	९-३० ,,
५.	पहली घटी, सात्तुमोरै	,,	९-३० ,,	,,	१०-०० ,,
६.	सर्वदर्शन	,,	१०-०० ,,	,,	११-३० ,,
७.	दूसरी घटी अष्टोत्तरम् (एकात)	,,	११-३० ,	मध्याह्न	१२-०० ,,
८.	तीर्मानम्	मध्याह्न	१२-००		
९.	सर्वदर्शन	शाम	४-०० से	,,	६-०० ,,
१०.	तोमाल सेवा & अर्चना रात का कैंकर्य तथा सात्तुमोरै	शाम	६-०० ,,	,,	७-०० ,,
११.	सर्वदर्शन	रात	७-०० ,,	,,	८-४५ ,,
१२.	एकांत सेवा	,,	८-४५ ,,	,,	९-००

अर्जित सेवाओं की दरें

१	अर्चना & अष्टोत्तरम्	रु. ३-००
२.	हारती	रु. १-००
३.	नारियल फोडना	रु. ०-५०
४	सहस्र नामार्चना	रु. ५-००
५.	पूलगि (गुरुवार)	रु. १-००
६.	अभिषेकानतर दर्शन (शुक्रवार)	रु. १-००

कार्यनिर्वहणाधिकारी,
ति. ति देवस्थान, तिरुपति.

तिरुमल यात्रियों को सुविधाएँ

* * * *

* सभी तरह के लोगों को रहने के लिए मुफ्त में दी जानेवाली धर्मशालाए या उचित दरों पर मिलनेवाले काटेजस का प्रबंध।
* श्री बालाजी के दर्शन के लिए जानेवाले यात्रियों के क्यू षेड्स में हवा तथा प्रकाशमान सुविशाल कमरों का प्रबंध।
* क्यू षेड्स में ही काफी बोर्ड के द्वारा नाश्ता का प्रबंध।
* उचित दरों पर दही-भात के पोटलियों का विक्रय।
* यात्रियों को बिना बाहर आये ही, क्यू षेड्स के पास ही सण्डास का प्रबंध।
* आंध्र प्रदेश सरकार के डेयरी डवलपमेंट कार्पोरेशन के द्वारा शुद्ध दूध आदि का विक्रय।
* यात्रियों को पढने के लिए देवस्थान से प्रकाशित ग्रंथ तथा भगवान बालाजी व पद्मावती देवी के चित्रपटों का विक्रय।
* यात्रियों को मनोरंजन तथा विश्राम के वास्ते टेलिविजन का प्रदर्शन व संगीत का प्रसार।
* क्यू लाईन में तथा तिरुमल को पैदल जाने के रास्ते में ७ वीं मील पर चिकित्सा की सुविधा।
* सामान व चप्पल को रखने के लिए विशेष सुविधाएँ।
* तिरुमल के सेन्ट्रल रिसेप्षन आफिस से अन्य प्रांतों को आटो रिक्शा (Auto Rickshaw) की सुविधा।
* तिरुमल को पैदल जानेवाले यात्रियों के सामान को तिरुमल तक पहुँचाने का प्रबंध।
* धोखेबाज या दलालों से रक्षा करने के लिए पेष्कार के ओहदे पर अधिकारी की मुखद्वार पर नियुक्ति।
* क्यू षेड्स के यात्रियों की शिकायतों की जाँच - पडताल करने को तथा आवश्यक सुविधाओं को इन्तजाम करने के लिए पेष्कार के ओहदे पर अधिकारी तथा कर्मचारियों की नियुक्ति।
* देवस्थान से दी जानेवाली ऐसी अन्य बहुत सुविधाएँ है।

सूचना :— तिरुमल में दि २–४–७९ से डाकघर रात को ८–३० बजे तक काम करती है। इसके अलावा मुख्य डाकघर रात के १०–३० से २–०० बजे तक काम करती है। अगर चाहें तो श्री बालाजी के भक्त अन्नमाचार्य के डाक-मुहर अपने कार्ड या कवरों पर छपवा सकते हैं।

परम धर्म भागवत-धर्म

जो 'सत्य पर धामहि' एव 'अहिंसा परमो धर्मः' आदि अद्वितीय परम मंत्रो की दीक्षा देता है और सर्वदेश, सर्वदशा तथा सर्वकाल में सब प्रकार के अधिकारियो के लिये उद्धार का सरल मार्ग प्रशस्त करता है, वही धर्म समस्त धर्मों में परमश्रेष्ठ माना जा सकता है। यही भागवत-धर्म है। भागवतधर्म एक आदर्श विश्वविद्यालय है, जिस में ज्ञान-विज्ञान, वैराग्य और भक्ति की शिक्षा मिलती है। इसमें मनुष्य की तीन परीक्षाएँ होती है। 'मानव' अपना प्राथमिक परीक्षा, 'वैष्णव' अपना माध्यमिक परीक्षा और 'भागवत' अपना सर्वोच्च परीक्षा है। यह धर्म ही उच्चतम आध्यात्मिक जीवन तथा परमानन्द की प्राप्ति का महान् साधक है।

बहुत प्राचीन समय से जिस की ज्ञान-गंगा का परम पवित्र प्रवाह चारो दिशाओ में निरतर साक्षात् अथवा परोक्षरूप से बह रहा है एवं असस्कृत मानवो को संस्कृत बना रहा है, वही परम धर्म भागवत-धर्म है, जो वैदिक धर्म का रूपान्तर अथवा सरल संस्करण मात्र है। इस की महत्ता सर्वोपरि है, व्यापकना अपरिमित है। इतना ही नहीं, परतु यह धर्म प्राणिमात्र का प्राण है।

श्री जयरणछोडदास भगत
बरोडा.

भागवत धर्म विश्व का सविधान है। जिस प्रकार राष्ट्र के लिये एक संविधान होता है, उसी प्रकार सृष्टि का भी संविधान है। जिस को विश्व-शासन कहते है, वही भागवत धर्म है। प्रकृतिका संचालन-कार्य करनेवाली एक शक्ति है, जो अनत एवं अगोचर है। यही शक्ति कुछ नैसर्गिक नियमो के आधार से विश्व का सर्वांगसुंदर विकास नियमित करती रहती है। विश्व के सविधान (वेद) का उद्देश्य है—सम्पूर्ण समाज को सदाचार के द्वारा भौतिक स्तर से आध्यात्मिक स्तर पर पहुँचा देना तथा सारी जड-चेतन समाज का कल्याण-साधन करना। यही 'भागवत धर्म' का उद्देश्य है। अतएव भागवत धर्मको विश्व का सविधान करने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

जीवात्मा पर जब परमात्मा की परम कृपा होता है, तब उसको मनुष्य जन्म प्राप्त होता है। इससे भी अधिक कृपा होती है तब सत्सग का लाभ होता है। सत्सग से ही 'भागवत धर्म' का ज्ञान प्रकाशित होता है। श्रद्धा और विश्वास पूर्वक धर्मशास्त्र का स्वाध्याय, सतो का सेवन, प्रभु सेवा के भाव से जन सेवा निष्काम भाव से प्रेमपूर्वक प्रभुस्मरण, सर्वत्र प्रभु दर्शन—यही सत्सग है। सत्सँग से स्वानुभव होता है। स्वानुभव सर्वोत्तम गुरु है। सदाचार का पालन करके शरीर, मन, वाणी को पवित्र निर्मल बनाकर अतःकरण की शुद्धि करना ही स्वानुभव है। अन्तर की सद्वृत्ति का बलि में आचार द्वारा दर्शन होता है।

शास्त्रकारो एव भगवद्भक्तों ने भागवतधर्म का स्वरूप दर्शन कराते हुए कहा है कि 'दूसरों के दुःखों को जानना, प्राणीमात्र की सेवा करना दयाभाव रखना, मिथ्याभिमान नहीं करना, सबको पूज्यभाव से देखना एव वन्दन करना, गुरुजन (माता, पिता, आचार्य, अतिथि) तथा दुःखी प्राणी की सेवा करना, किसी की भी निन्दा नहीं करना, मन, वाणी, शरीर पर नियन्त्रण रखना, जितेन्द्रिय बनना, समदृष्टि रखना, तृष्णा का त्याग करना, परस्त्री का स्वप्न में भी दर्शन नहीं करना, ज्ञान और वैराग्य का विकास करना और प्राण चले जायं, पर असत्य नहीं बोलना, किसी के धन की वामना नहीं करना, काम-क्रोध-लोभ-मोह का त्याग करना, एव प्रपंच

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

आदि शंकर महिमा

(द्वितीय खण्ड)

श्री के. एन. वरदराजन्, एम.ए. बी.एड.,
कल्पाकम.

दूसरे दिन शकर ने देखा एक गूँगे बालक को
पूछा "तुम कौन हो ? तुम क्यों यहाँ आये हो"
ज्ञानी बालक ने कहा "मैं हूँ ज्ञान, शरीर नहीं हूँ"
सुन कर शकर ने कहा "तुम ज्ञानी हो, महान लक्ष्य से आए हो"

उस दिन से वही हस्तामलक नाम से गुरुका दूसरा शिष्य बना
तुरंत ही तोटकाचार्य तोटक के श्लोकों की माला लिये आ खडे हुए
शंकरजी उनको तीसरा शिष्य मानकर अति सन्तुष्ट हुए,
तीन शिष्यों से सपन्न शंकर को देख कर काशी के लोग धन्य हुए।

एक दिन प्रातः स्नान के बाद गुरुवर विश्वनाथ के दर्शन हेतु गए
मार्ग पर चार कुत्तों सहित चण्डाल को देख कर वे चौंक पडे
कहा "तुम चंडाल हो" "अछूत हो" "मार्गपर से हट जाओ"
चंडाल ने प्रतिवचन दिया संस्कृत में सामने डटे रहकर।

कहा बिना डरके, "कहाँ हटना" "किससे हटना" "क्यों हटना?"
सब के शरीर बने हैं एक ही पदार्थ के, अब समझना
आत्मा भी एक है जो सब के शरीर में रहके मार्ग दिखाती है
भेद भावना तुम छोडो, जो मानव बुद्धि को पथ भ्रष्ट कर देती है।

सूरज का प्रतिबिंब एक ही है जो है दीखता मोरी और गंगा के जल में
वैसे हवा भी एक है जो स्पर्श करती चडाल और ज्ञान शुद्ध ब्राह्मण को
आत्मा भी अभिन्न है जो है पतित में और श्रुतिज्ञ द्विज में
चण्डाल ने कहा, हे विप्र, यह तथ्य अब तक न भाया तुम को।

यह सुनकर शकर के मुखारविन्द से "मनीषा पञ्चक" निकला
जो पोत बना मनुज जाति को जो डूबी है अज्ञान सागर में
जो कहता है "मानव! सब लोग समान हैं आपस में इस जग में"
"वही है पापी" "वही है अज्ञानी" जो किसी को नीच समझता।

शकर की शब्दब्रह्म के भक्त एक वैयाकरण से मुलाकात हुई।
उसके अज्ञान जानकर शंकर के मन में दया पैदा हुई
उपदेश दिया भाषा का रक्षक व्याकरण तेरी रक्षा नहीं करेगा
पंडितवर भवांबोधि पोत गोविन्द चरण ही रक्षा करेगा।

शंकर मुनि गए बदरी को नरनरायण के दर्शन करने
जहाँ वेदव्यास गए साक्षात नारायण से ज्ञानार्जन करने
जिसकी स्थिति से हिममंडित पर्वतराज पवित्र बना है
जिसका स्मरण ही मानव के चिरसंचित पाप को राख बनाता है।

शकर काशी पहुँचे जहाँ जगद्वन्दित पदपद्म विश्वनाथ हैं
जिसके सिर पर की गगा देखती बहती गंगा को पानी के रूप में
जिसके ऊँचे भवनों से टकरा कर सूर्य के घोडे पुरोगमन भूल जाते
जिसके भवनों पर थके बादलों के समूह आराम करने आके बैठते

यही है वह काशी जो पुनीत है पराशर की चरण धूलि से
यहीं नारायण ने शिवजी को राममन्त्रका उपदेश किया
यही ज्ञान की गगोत्री है जहाँ आए तृषित पंडितवर प्यास बुझाने
यही देती उनको मोक्ष जो यहाँ अपनी देह का विसर्जन करते।

यह वह नगरी है जहाँ करुणामय बुद्ध देव ने धर्मचक्र को घूमने दिया
यहाँ के मन्दिरों के शुक भी वेदों का पठन हमेशा करते रहते
ऐसे व्यक्ति जो वेदो के कुछभाग भूले हैं उनको इनसे सीखते जाते
तोतों की सुरीली आवाज सुनकर नारद वीणा बजाना भूलगया।

यह है पवित्र काशी जहाँ धर्म गगा के रूप में बहता है
यहाँ विवाद न होता पतिपत्नी में, पर, शास्त्रों पर विद्वज्जन में
यहाँ विश्वनाथ से डरकर यमराज लोगों के प्राण लेता बुढापे में
यहाँ का नरगण ईर्ष्या, लोभ, क्रोध आदि से मुक्त रहता है।

निवृत्त होकर बदरी से काशी में लिखे शंकर ने भाष्य और अन्यग्रन्थ
मुक्तिमण्टप में इकट्ठे हुए शिष्य और द्विजवर सुनने उनके सद् ग्रन्थ
शंकर ने उनका प्रवचन कर धर्म का झंडा फहराया वहाँ
बादमें, नर पूछनेलगे आपसमें, अधर्म का नाम कहाँ ?

पूर्व मीमांसा के महास्तंभ भूत मडन मिश्रसे मिले गुरुवर
आह्वान किया श्राद्धकर्मरत उनको विवाद करने मीमांसा पर
मिश्रजी भी विवाद करने सहर्ष आए मीमांसा पर
उनकी पत्नी सरसवाणी वाणीवत् आरूढी वहाँ पर।

सकल शास्त्रों में वह विदुषी थी उस काल काशी में
देखा आगन्तुक को उसने, समझा उसको पंडितवर
ऊँचे स्वर में उसने कहाथा "सुनिए माला पहनाऊँ
वह हार जाता वादविवाद में जिसकी माला मुरझाती है'।

कई दिवस तक वादविवाद उन दोनों में चलता रहा
धीरे धीरे मडन मिश्र का फूलों का हार मुरझा गया
महाविदुषी ने हाथ उठाकर घोषणा की थी सब के समक्ष
"कोई नहीं है इस पृथ्वी पर शंकरजी के समकक्ष।

मंडनमिश्र ने शंकरजी से कहा" मैं अब तो हार गया
आप का शिष्य बनकर रहूँगा, इससे बढकर कुछ है क्या"?
गद्गद स्वर में बोलते मिश्र को गले लगाया गुरुवर ने
"आप सन्यासी बनकर रहें अजी"! तदा कहा था यतिवर ने

मंडनमिश्र की महिला भी तब शंकरजी की शिष्य बनी
सुरेश्वर नाम धर मंडनमिश्र ने भाष्य समूह की रचना की
जानलिया था गुरुवर ने तब मृत्युका आना माता के पास
तुरंत रहे थे योग बल पर कालडि में वे माता के पास।

पुत्र को देखकर मुग्ध हुई मां तुरंत मूँद लीं आखें उसने
स्वयं को कृतार्थ समझ कर गुरु ने किया था धन्यवाद प्रभु को
ज्ञानविहीन बन्धुगण बोले "यतिवर होतुम" "इसे न जलाओ"
"प्रेतकार्य में हम भाग न लेंगे" 'धर्म का नाश तुम करते हो

इस निस्सहाय दशा में गुरु ने धैर्य न छोडा उपवन के
एक भाग में सूखे कदली डंठल की चिता सहसा बना के
रखके माता जी का शरीर उसपर, अग्नि की प्रार्थना की
तुरंत चिता तब जलने लगी अग्नि ने उनकी दुआ सुनी।

गुरुने भारतयात्रा की थी कई बार धर्म की रक्षा करने
अन्य धर्म के विद्वानों को हरा दिया था वाद में मति से
ध्वस्त मन्दिरों को बनवाया गुरु ने बडे बडे भूपतिओं से
जो हैं भारत की संस्कृति सभ्यता आदी की ससिद्ध रक्षा करने

गुरुने कहाथा "अद्वैत ही सत्य है, द्वैत कदापी नहीं है,
ब्रह्म तो पूर्ण है वह खण्डन के योग्य नहीं है जग में
जनके हितार्थ वे लाए पाँच स्फटिक के लिंग धवल कैलास से
जो प्रतिष्ठित हैं केदार, नेपाल, चिल्लै, शृंगेरी अरु काञ्चो में।

ब्रह्म सूत्र का भाष्य रचा था जो है विश्रुत उनके नाम से
भगवद्गीता अरु उपनिषदों के भाष्य बनाए शंकर ने
जिनके स्तभों पर रहता है वैदिक धर्म का सुदृढ भवन
उन भाष्यों की जयहो जयहो जिनके कर्ता की जयहो।

वांछित कार्य को पूराकरके यतिवर स्वर्ग सिधार गये
बत्तीस वर्ष की आयु में भौतिक देह को छोडकर पृथ्वी पर
उनकी कीर्तिपताका फहरे जबतक धरती रहती है
उनकी महिमा गाई जाये जबतक वाणी नर में है।

— आदिशंकर महिमा समाप्त।

तिरुमल-यात्रियों को सूचनाएं

कलियुगवरद भगवान बालाजी संसार के कोने कोने से अगणित भक्तों को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। हर रोज हजारों भक्त कलियुगवैकुण्ठ तिरुमल का दर्शन कर पुनीत होते हैं। तिरुपति तथा तिरुमल पहुंचनेवाले इन असख्य भक्तगणों की सुविधा (यातायात, आवास, बालाजी का दर्शन इत्यादि) केलिए ति. नि. देवस्थान उत्तम प्रबन्ध कर रहा है। इन सुविधाओं के अतिरिक्त यात्रियों के भोजन की समस्या की ओर भी ध्यान दिया जा रहा है। देवस्थान की ओर से भोजनशालाओं की व्यवस्था तो है ही है उसके अतिरिक्त तिरुमल पर अन्य भोजनशालाएं भी हैं जिन में भोजन पदार्थों की दरें ति. ति. देवस्थान के द्वारा नियन्त्रित की जाती हैं। अतएव यात्रियों से निवेदन है कि वे इन भोजन सुविधाओं का उपयोग करें।

तिरुमल पर भोजन सुविधाएं

ति. ति. देवस्थान का अतिथि गृह

जलपान	(समय)	प्रातः ६ बजे से	९ बजे तक
		दोपहर ३ ,,	शाम ६ ,,
भोजन	,,	प्रातः ११ ,,	दोपहर २ ,,
		रात ७ ,,	रात ९ ,,

यहां पर मिठाई, नमकीन, चाय, काफी इत्यादि पदार्थ उपलब्ध हैं।

भोजन (full) रु ३-००

जो लोग यहा से भोजन अथवा जलपान प्राप्त करना चाहते है उनको नियमित समय के तीन घंटे के पूर्व ही आर्डर (order) देना चाहिए।

काफी बोर्ड (कल्याणकट्टा के पास)

यहां पर केवल जलपान प्राप्त कर सकते है।
समय - प्रातः ५ बजे से रात १० बजे तक

काफी बोर्ड (क्यू शेड्स के पास)

यहां पर दहीभात, हल्दीभात तथा शीत पेय प्राप्त होते है।
समय प्रातः ५ बजे से रात १० बजे तक

टी बोर्ड (ए. टी. काटेज के पास)

यहां पर चाय तथा बिस्कुट प्राप्त होते है।
समय : प्रातः ५ बजे से रात ९ बजे तक

अन्नपूर्णा भोजनालय

यहां पर अनेकविध मिठाई, नमकीन आइस क्रीम, शीत तथा गरम पेय प्राप्त होते हैं।
(समय) प्रात : ५ बजे से रात १० बजे तक

भोजन समय - प्रात : ९ बजे से शाम ३ बजे तक
तथा
शाम ६ बजे से रात १० बजे तक

भोजन (थाली)	रु. १-७५
अतिरिक्त प्लेट भात	रु. ०-६०
भोजन (full)	रु. ३-००

वुडलॉड्स (ति.ति.दे के अतिथिगृह के पास)

यहा पर जलपान, भोजन, शीत तथा गरम पेय प्राप्त होते है।

जलपान	(समय)	प्रातः ६ बजे से रात १० बजे तक
भोजन	,,	प्रातः ११ बजे से दोपहर २-३० बजे तक

मद्रास भोजन	रु. ४-००
उत्तर भारतीय भोजन	रु. ६-००
प्लेट भोजन	रु. १-७५

तिरुपति में देवस्थान का भोजनालय

ति ति देवस्थान का भोजनालय (पहली धर्मशाला)

समय प्रातः ५ बजे से रात ९ बजे तक

यहां पर जलपान, आम्रो बिस्कुट तथा शीत और गरम पेय प्राप्त होते हैं।

ति. नि. देवस्थान का भोजनालय (दूसरी धर्मशाला)

यहां पर जलपान, भोजन, शीत तथा गरम पेय प्राप्त होते हैं।

जलपान	(समय)	प्रातः ५ बजे से	प्रातः ९-३० बजे तक
		दोपहर २-३० ,,	शाम ६ बजे तक
भोजन	,,	प्रातः १०-३० ,,	दोपहर २ बजे तक
		६-३० ,,	रात ९ ,,

प्लेट भोजन	रु. १-५०
अतिरिक्त भात (३५० ग्राम)	रु. १-००
वही	रु. ०-४०

"बाल वाणी, ब्रह्म वाणी है।"—यह आर्योक्ति है। नन्हें से भोले-भाले बच्चों को भगवान के प्रतिरूप कहते हैं। ऐसे शिशु अपने भोलेपन तथा अच्छाई और सुन्दर क्रीडाओ के द्वारा सभी से प्रशंसनीय रहते हैं। ये घरों के ही नही, बल्कि देश के उज्ज्वल भविष्य के आशाज्योती हैं।

वास्तव में उनके अच्छे होने पर भी, तथा ईश्वर प्रदत्त बुद्धि और प्रतिभा से युक्त होने पर भी, अभ्यास से ही विद्या की सिद्धि होती है। ऐसी विद्या पाकर ही वह बुद्धिमान तथा प्रतिभावान नागरिक बनता है। भावी जीवन में इसके चाल-चलन तथा व्यवहार सभी बाल्यवस्था में मिलनेवाली शिक्षा पर ही निर्भर रहते हैं—यह तो सर्वविदित सत्य है। शिशु के लिए माता-पिता ही पहले गुरु होते हैं। और घर ही उसके लिए प्रथम विद्यालय होता है। जहाँ वे कुछ अक्षरों को बोलने व लिखने सीखते हैं। परंतु आज के नव नागरिक समाज में मानव को जहाँ यांत्रिक जीवन बिताने की आदत पड गयी, वहाँ अपने इस कर्तव्य को निभाने का समय ही नही मिल रहा है। इसलिए बहुत छोटी सी उम्र में ही शिशुओं को घर छोडकर पाठशाला जाना पडता है। ऐसी परिस्थितियों में बच्चों के लिए शिशु विद्यालय व प्राथमिक विद्यालय की आवश्यकता अत्यधिक है।

प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय शिक्षा तक रही तिरुमल तिरुपति देवास्थन की बृहत् विद्या व्यवस्था में शिशु विद्यालय का महत्व अत्यंत पहले से हैं। इस पर सभी की श्रद्धा तथा असक्ति रही। बच्चों में अच्छे गुण तथा जीवन के नैतिक मूल्यों के विकास के लिए देवस्थान के स्वयं पर्यवेक्षण में कई पाठशालाएँ हैं। सिर्फ नैतिक
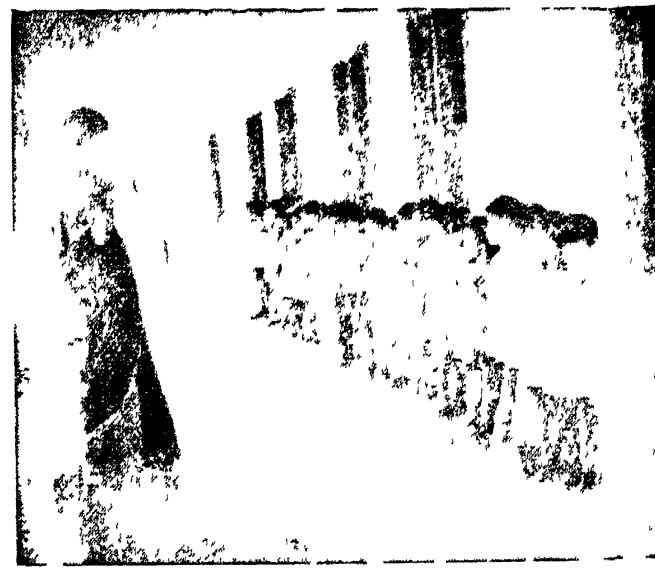
सरस्वती नमस्तुभ्यम्.. .. ... .

व धार्मिक शिक्षा के अलावा जीवनोपयोगी तथा मानवीय व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक शिक्षा दी जा रही है। इस अंतर्जातीय बाल वर्ष में देवस्थान के इन शिशु पाठशालाओं की स्थापना तथा उनकी प्रगति के बारे में और शिशु सक्षेम की विविध प्रणालियों की समीक्षा करना अत्यंत उपयुक्त होगा।

पाठशाला यह है। इस में पहले से लेकर पांचवी तक कक्षाएँ हैं। केवल संख्या में ही नहीं, श्रेणी में भी उत्तम होने के कारण दो साल के लिए राष्ट्र में आदर्श विद्यालय घोषित हुआ।

इस पाठशाला की उन्नति के लिए निरंतर प्रयास करनेवाले प्रधानाध्यापक श्री वै. ज्ञान.

देवस्थान के शिशु संक्षेम कार्यक्रम

तेलुगु मूल:
श्री के. चेंचुकृष्णय्या सेट्टी, तिरुपति

हिन्दी अनुवादक
श्री धारा. सुब्रह्मण्यम्

श्री वेंकटेश्वर प्राथमिक विद्यालय, तिरुमल

सिर्फ चित्तूर जिले के ही नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र में प्रशंसनीय प्राथमिक पाठशाला यह है। स १९१६ में इसे सरकार की मान्यता प्राप्त है। चालीस सेक्षनों से, दो हजार दो सौ छात्रों से तथा ३८ अध्यापकों से चलनेवाली बड़ी

चक्रवर्मा जी को स १९७८ में सन्मान सहित स्वर्णपतक प्रदान करने के कारण देवस्थान का गौरव बढा। इस पाठशाला के छात्र चि. बी. आदिनारायण ने स १९७७ में मनाये गये लेख-स्पर्धा में पूरे राष्ट्र में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। तब के शिक्षा मंत्री श्री मडलि वेंकट कृष्णाराव जी से प्रशसा तथा मेमेण्टो को भी प्राप्त किया।

भोजन करते हुए छात्र - छात्राएँ

इस पाठशाला के विकास को ध्यान में रखकर देवस्थान ने इसके नूतन भवन निर्माण केलिए रु. २५ लाख का अनुदान दिया। अब भवन निर्माण कार्य चालू है।

श्री वेंकटेश्वर वेद शास्त्रागम विद्याकेंद्र, तिरुमल

यह विश्वख्यात विद्या संस्था है। सं. १९२३ में सिर्फ वेद पाठशाला के रूप में प्रारम्भ किया गया, बाद में संस्कृत भाषा तथा साहित्य का अध्ययन भी शुरू किया गया है। अब यह वेद शास्त्रागम विद्याकेंद्र के रूप में मशहूर हो रहा है। इस पाठशाला में कुल छात्रों की संख्या १७० है। अध्यापकों की संख्या २१ है। इसके प्रधानाधिकारी प्राचार्य हैं। दस या बारह साल की उम्र के बच्चों को जो ५ वीं कक्षा में उत्तीर्ण हैं, उनको ही इसमें प्रवेश मिलता है। वेदाध्ययन तथा संस्कृत आदि में ब्राह्मण तथा ब्राह्मणेतरों को प्रवेश मिलता है।

वेदाध्ययन में ऋग्वेद, शुक्ल, कृष्ण यजुर्वेद हैं। अथर्वण वेदाध्यन नहीं है। पाचरात्रागम, वैखानसागम, शैवागम व स्मार्तागम हैं। प्रबंध व दिव्य प्रबंध भी हैं। पूरे देश में इतनी वैदिक विद्या शाखाओं से चलनेवाला मुख्य केंद्र यही है। वेदों के साथ साथ प्रवेश परीक्षा केलिए छे साल का संस्कृत में भी शिक्षण देते हैं। प्रवेश परीक्षा के बाद यहाँ के छात्र तिरुपति स्थित श्री वेंकटेश्वर प्राच्य महाविद्यालय में शामिल होकर शिरोमणि की उपाधि प्राप्त कर सकते हैं। इस वेद पाठशाला में पढनेवाले सभी छात्रों को भोजन व आवस मुफ्त में दिये जाते हैं। शिक्षणानंतर नौकरी दिलाने का भार भी देवस्थान ने हाल ही में उठा लिया। यहाँ के निष्णात वेद विद्वानों को वेदपारायणदारों के रूप में नियमित कर रहे हैं।

पहले से इस केंद्र में दस साल का अध्ययन चालू था, जिसे "क्रमापाटी" कहते हैं। लेकिन अभी तेरह साल का "घनापाटी" अध्ययन शुरू किया गया है।

केवल संस्कृत को छोडकर बाकी सभी वैदिक विद्याशाखाओं में तेरह साल का अध्ययन होता है। यह स्नातक स्तर के समान है। लौकिक व्यवहार केलिए इसमें अंग्रेजी और तेलुगु भाषाओं को भी सिखाया जा रहा है।

हर साल वेद विद्वत् परिषद् के द्वारा इस विद्या केंद्र में परीक्षाएँ चलाकर, उत्तीर्ण छात्रोंको उपाधि-पत्र दिये जा रहे हैं।

गुरुकुल वातावरण में चलनेवाले इस विद्या केंद्र में छात्रों को आचार-व्यवहार, वेषधारण या तिलक धारण नियमानुसार करनाचाहिए, जो प्राचीन समय के मुनि बालकों को याद दिलाते हैं। यहाँ के छुट्टी के दिन भी अन्य संस्थाओं से भिन्न होते हैं। अष्टमी, चतुर्दशी, अमावास्या या पूर्णिमा

खेल के मैदान मे बच्चे

आदि दिनों में वेदाध्ययन नहीं होता है। हर शुक्रवार को विशेष पूजाएँ व धार्मिक भाषण रहते हैं। तिरुमल स्थित आर्ष संस्कृति सदस्सु के कार्यक्रमों से इसका संबंध होता है। हिन्दू धर्म के उद्धारक तथा पूजनीय कंचि कामकोटि पीठाधिपति, श्रृंगेरी जगद्गुरु स्वामी जी आदि महापुरुषोंने इस विद्या केंद्र में विशेष धार्मिक कार्यक्रम चलाने की कृपा की। भारत के राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, मुख्यमंत्री जैसे प्रमुख राजनीतिज्ञों ने समय-समय पर इस विद्यालय का सदर्शन करके इसके महत्व की प्रशंसा की है।

श्री वेंकटेश्वर मूक, बधिर व अंधों की पाठशाला

इस पाठशाला को २५ जून, १९७४ में शुरू किया गया है। इसमें ग्रेड १ से लेकर ग्रेड ४ तक तथा ग्रेड ६ में कुल मिलाकर ७६ छात्र हैं। अबतो मूक, बधिर छात्र ही हैं, न कोई अंध। बिना कुल मतभेद के सभी विकलांग बच्चोंको इसमें प्रवेश मिलता है।

पांच वर्ष से लेकर दस वर्ष की उम्र के बच्चों को ही इसमें प्रवेश दिया जाता है। इसके मुख्याधिकारी प्रिन्सिपाल हैं। सात अध्यापक, चार अध्यापिकाएँ यहाँ के बच्चों को शिक्षण दे रही हैं। सभी अध्यापक इस क्षेत्र में शिक्षण देने केलिए आवश्यक रूप से सुशिक्षित हैं। तिरुपति के रामनगर स्थित सुविशाल मकान में छात्रावास के साथ यह विद्या केंद्र पूरे दक्षिण भारत में बडा मशहूर है। इस पाठशाला में प्रवेश पाते समय न बोल सकने वाले मूक छात्र, न सुन सकने वाले बधिर छात्र, शिक्षण के बाद जब बाहर जाते हैं, तब बोल भी सकते हैं और सुन भी सकते हैं। अपने दौर्भाग्य को बिदाई देकर नूतनोत्साह से समाज में फिर भाग
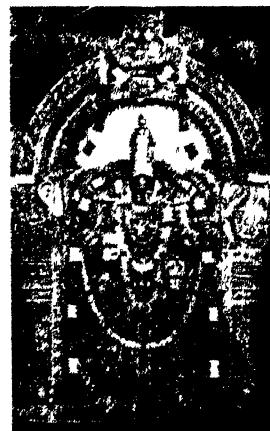
(शेष पृष्ठ २३ पर)

वार्षिक सचित्र

महामहोपाध्याय श्री ईमनी शंकरशास्त्री जी (वयोलिन विद्वान) को (ऊपर के चित्र में) तथा श्री येल्ला वेंकटेश्वर राव जी (मृदंग विद्वान) को (नीचे के चित्र में) सन्मान करते हुए देवादाय शाखा के कमीशनर श्री चन्द्रमौली रेड्डी जी।
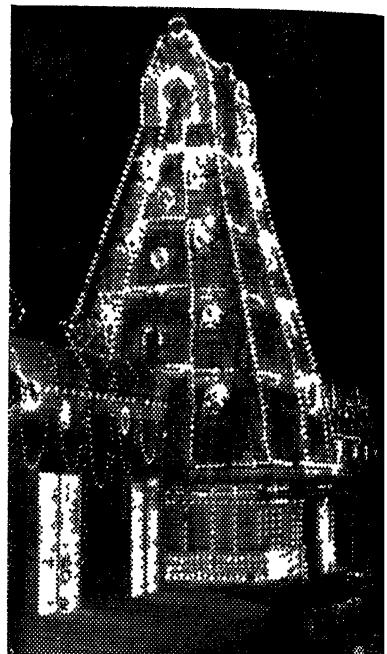
रंग बिरंगे विद्युद्दीपालंकृत

होत्सव-
समाचार

वान श्री बालाजी का मंदिर

श्री नेदनूरि कृष्णमूर्ति जी (ऊपर के चित्र में) तथा श्री पिनाकिपाणी जी (नीचे के चित्र में) की संगीत कचेरी

प्रमुख सगीत-गायकी श्रीमती एम. एल. वसंतकुमारी की सगीत कचेरी।

श्री वीरगंधं वेंकटसुब्बाराव जी से हरिकथा गान।

एकलव्य की गुरु भक्ति

श्री एम. सुब्रह्मण्य शर्मा

हमारी पौराणिक कहानियाँ ऐसे बहुत हैं, जिनमें बच्चों की बहादुरी, गुरुभक्ति, सहृदयता व त्याग इत्यादि सद्गुण प्रकट होते हैं। उनमें से एकलव्य की कहानी गुरुभक्ति केलिए प्रमुख उदाहरण हैं। अब हम इस कहानी में उस एकलव्य की गुरुभक्ति के बारे में पढेंगे।

हिरण्यधानु नामक एक पहाडी नायक का पुत्र एकलव्य था। बचपन से ही वह तीर चलाने में प्रवीण बनना चाहता था। उस जमाने में धनुर्विद्या सिखाने में गुरु द्रोणाचार्य जी अतुल्य थे। वे राजपुत्र पांडवों व कौरवों के गुरु भी थे। बहुत दूर पैदल चलकर एकलव्यने द्रोण जी के आश्रम को पहुँचा। द्रोणजी को साष्टांग प्रणाम करके एकलव्य ने कहा कि "पूज्य गुरुजी, मुझे धनुर्विद्या सिखाइये।" द्रोणाचार्य जी सोचने लगे। वे नहीं चाहते थे कि राजकुमारों के लायक धनुर्विद्या में उस पहाडी बालक को निपुण बनाना। इसलिए उन्होंने इनकार कर दिया।

निराश होकर भी एकलव्य ऐसा जवाब सुनकर कुछ न कहा। वह पुनः द्रोणाचार्यजी पैर छूकर घर लौटा। घर में चुप न बैठ सका। एक बरगद के पेड के नीचे स्वयं अपने हाथों से द्रोणाचार्यजी की मूर्ति मिट्टी से बनाकर स्थापना की। तब उस मूर्ति के पैरों में धनुष व तीर रखकर आशीर्वाद लिया। तब से तीर चलाना शुरु किया। न जाने कितने साल बीता, एकलव्य अत्यंत एकाग्रता से धनुर्विद्या सीख रहा था।

सालों के बाद एक दिन द्रोणाचार्यजी अपने शिष्य राजकुमारों सहित उस पहाडी प्रांत को आये थे। उस समय एकलव्य तीर चला रहा था। तीर चलाने में उसकी निपुणता को देखकर अर्जुन ने कहा कि "गुरुजी आप तो बार-बार कह रहे थे कि तीर चलाने में हम से बढकर और कोई न हो सकता है। लेकिन इस पहाडी लडके के सामने हम अद्वितीय कैसे हो सकते है, बताइए।" अर्जुन की बात सुनकर द्रोणजी उस लडके को बुलाया। जब वह पास आया था, गुरु द्रोणाचार्य को पहचान कर अत्यंत पूज्य भाव से साष्टांग प्रणाम किया। तब गुरु ने कहा—"उठो बेटा। मुझे तो पहले बताओ कि तुम्हारा गुरु कौन है?" इस प्रश्न को एकलव्य ने उत्तर दिया कि आपसे बढकर मेरा गुरु और कौन हो सकते हैं? उधर देखिए? आपकी उस मूर्ति के द्वारा आशीर्वाद पाकर मैंने तीर चलाना शुरू किया। इस जवाब से द्रोणाचार्य व राजकुमार चकित हो गये। पुनः द्रोणाचार्यजी ने कहा—"अच्छी बात है। अब हमें गुरु दक्षिणा चाहिए। एकलव्य ने तुरंत कहा—" आप जो भी मांगे, मैं देने के लिए तैयार हूँ। फौरन द्रोणजी ने कहा कि "तब तो तुम्हारे दाहिने हाथ की तर्जनी दो। तुरंत एकलव्य ने छुरी से अपने दाहिने हाथ की तर्जनी काटकर गुरु दक्षिणा के रूप में गुरुजी को दे दिया। वह जानता था कि दाहिने हाथ की तर्जनी काटकर देने से जन्मात तक तीर चला नहीं पावेगा। फिर भी गुरु की आज्ञा का पालन प्रसन्न मुख होकर किया था। द्रोणाचार्य जी ने एकलव्य की इस दक्षिणा को लेकर आंसू भरी आंखों से उसे आशीर्वाद देकर चला गया।

उस आशीर्वाद का फल यह है कि हजारों सालों के बाद आज भी एकलव्य एक अमर गुरु भक्त हो गया है।

मेरी आशा यह है कि बच्चों! आप भी एकलव्य के समान गुरु भक्त होकर भविष्य में भारत माता की सेवा करेंगे। *

(पृष्ठ १९ का शेष)

लेते हैं। यह उल्लेखनीय बात है कि यहाँ शिक्षा लेकर कई लोग नौकरी कर रहे हैं। स्वयं रोजगार के लिए ड्राइंग, सिलाई आदि में भी शिक्षण देना इसकी विशेषता है। इस पाठशाला की उन्नति के लिए देवस्थान नयी योजना की तैयारी में संलग्न है।

श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर, तिरुपति

अनाथ व गरीब छात्र-छात्राओं को भोजन व आवास मुफ्त में देने के लिए सन् १९४८ में इस बाल मंदिर की स्थापना हुई। देवस्थान की विविध पाठशालओं में अब के पढनेवाले १३५ छात्र छात्राएँ यहाँ रहते हैं। यह एक विशेषाधिकारी के नेतृत्व में एक मुनीम, दो रिकार्ड सहायक, एक अटेण्डर, एक परिचारक के साथ काम कर रहा है। लंगडे बच्चों की देखभाल करने के लिए परिचारिकायें भी हैं। छात्र - छात्राओं को पौष्ठिकाहार, कपडे तथा क्रीडा व्यवस्था आदि सभी इच्छाओं पूर्ति की करनेवाला

बच्चो के लिए मुफ्त में चिकित्सा की सुविधा

अभय मदिर है, यह बालमदिर। यहाँ के सभी विद्यार्थी अच्छेगुण, अनुशासन तथा भ्रातृत्व भाव सहित बडे होकर समाज में प्रशंसापात्र होते हैं। इसका सुंदर उदाहरण है कि यहीं पलकर देवस्थान की सेवा में रहनेवाले कई उच्चाधिकारियों को अब देख सकते हैं।

श्री वेंकटेश्वर प्राथमिकोन्नत पाठशाला, तिरुपति

बालमदिर से सबंधित यह पाठशाला उसी प्रदेश में सन् १९५१ से काम कर रही है। पहली कक्षा से लेकर सातवी कक्षा तक अठारह विभाग हैं। अब १०६२ छात्र-छात्राऍ यहाँ पढ रहे हैं। सात अद्यापक, पन्द्रह अद्यापिकाऍ इनको पढा रहें हैं। पांच वर्ष की आयु की समाप्त के बाद बाल बच्चे यहाँ प्रवेश पा सकते हैं। इस पाठशाला की उन्नति के लिए प्रधानाध्यापक कोशिश कर रहे हैं। अगर उनके इस प्रयत्न में देवस्थान की सहायता व प्रोत्साहन मिले तो, शीघ्रातिशीघ्र तिरुमल स्थित प्रमुख पाठशाला के जैसे एक बडी विद्या संस्था बनेगी।

श्री पद्मावती महिला कलाशाला तथा उनके नर्सरी व प्राइमरी स्कूल

श्री पद्मावती महिला कलाशाला के गृह विज्ञान विभाग से सम्बन्धित नर्सरी स्कूल सन् १९६८ में शुरू हुआ है। यहाँ शिशुओं के मानसिक व शारीरक विकास के तथा स्वास्थ-रक्षा आदि विषयों पर प्राधान्यता दी जाती है। एक स्कूल-कार्यवाहक तथा एक अध्यापिका यहाँ के बाल-बच्चों को अंग्रेजी में नवीन पद्धतियों से शिक्षा दे रही हैं। बच्चों की अंग्रेजी भाषा के ज्ञान को परीक्षा करने के बादही इसमें प्रवेश देते हैं। हर साल जून महीने में कलाशाला की प्रिन्सिपाल प्रवेश देती है। जूनियर नर्सरी मे प्रवेश के लिए ३ साल की उम्र तथा सीनियर नर्सरी केलिए ४ साल की उम्र होना अनिवार्य है। यहाँ मुफ्त में नही पढाया जाता है। शुल्क आदी का विवरण आवेदन-पत्र से ही दी जानेवाली विवरण पत्रिका में मिलता है।

नर्सरी स्कूल में पढाई पूरा होने के बाद यहाँ प्राइमरी स्कूल भी है। यहाँ एक से लेकर पांच कक्षाऍ है। प्रत्येक कक्षा में ३० विद्यार्थी के हिसाब से पढ रहे हैं। यहॉ शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। तेलुगु व हिन्दी भाषाओं को भी सिखाते हैं। पांच वर्ष के खत्म किये हुए बाल-बच्चों को प्रवेश परीक्षा रखकर, उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश देते हैं। अन्य अंग्रेजी माध्यम पाठशालाओं से अपने रिकार्ड शीट को लाकर यहाँ शामिल भी हो सकते हैं। अब तो एक स्कूल-कार्यवाहक और तीन अध्यापक काम कर रहे हैं। ड्राइंग तथा क्राफ्ट आदि विषयों में अध्यापकों की नियुक्ति करने का विचार भी है।

अनुशासन के प्रति किसी भी कमी का न होना इस पाठशाला की विशिष्टता है। सभी बाल बच्चे नियमानुसार वर्दी पहनना चाहिए। दैनिक कार्य का समय सुबह नौ बजे से लेकर दोपहार के तीन बजे तक है। बच्चों के लिए अलग बस की सुविधा भी है। सुन्दर तथा सुविशाल भवन, क्रीडा स्थल, फर्नीचर आदि इस पाठशाला में हैं। अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम में पढाने के इच्छुक माता-पिताओं को यह पाठशाला एक वरदान है।

इस प्रकार शिशु विद्या व्याप्ति के लिए देवस्थान द्वारा कई ऐसे कार्य किये जा रहे हैं; जो बहुत ही सराहनीय हैं। उनमें और प्रमुख हैं नादस्वर कलाशाला, शिल्प कलाशाला, सगीत नृत्य कलाशाला आदि इसके अलावा हाल ही में शिशु स्वास्थ्य सरक्षण के लिए देवस्थान के स्वास्थ्य विभाग द्वारा शिशुओं को परीक्षा करके ६१० बच्चों को व्याधि निरोधक टीकायें लगायी गयी। और देवस्थान द्वारा चलाये जानेवाले श्रीवेंकटेश्वर अनाथालय में कोढी व्याधिग्रस्त बच्चों को दवायें देकर व्याधि निवारण के लिए कोशिश कर हैं रहे। बच्चों में धार्मिक व नैतिक मूल्यों के उद्धार के लिए देवस्थान द्वारा सचित्र बाल कहानियों की पुस्तकों को प्रकाशित किया गया। तथा कम दरों में मिलने का प्रबंध भी किया गया है।

इस अंतर्जातीय बाल वर्ष के शुभ संदर्भ में बच्चों के मानसिक व शारीरक विकास तथा स्वास्थ्य रक्षा के लिए देवस्थान के अनुपम प्रयासों की प्रशंसा करना अनुचित न होगा। *

श्री वेङ्कटेश्वरस्वामीजी का मंदिर, तिरुमल.

अर्जित सेवाओं की दरें

विशेष दर्शन ... रु. 25–00

सूचना — एक टिकट के द्वारा एक ही दर्शनार्थी भगवान के दर्शन प्राप्त कर सकेगा।

I. सेवाएं :—

१	आमन्त्रणोत्सव	रु 200	६	जाफरा बरतन (Vessel)	रु 100
२	पूरा अभिषेक	450	७	सहस्रकलशाभिषेक	2500
३	कर्पूर बरतन (Vessel)	250	८	अभिषेक कोइल आलवार	1745
४	पुनगु तेल का बरतन (Vessel)	100	९	तिरुप्पाबडा	5000
५	कस्तूरि बरतन (Vessel)	100	१०	पवित्रोत्सव	1500

सूचना – सेवासंख्या १ — इस सेवा में दो व्यक्ति ही दर्शन प्राप्त कर सकेंगे। जिस दिन प्रातः काल तोमाल सेवा और अर्चना की है केवल उसी दिन रात में एकान्तसेवा के लिए भी भक्त दर्शनार्थ जा सकते हैं।

सेवा क्रमसंख्या २–६ — केवल शुक्रवार को मनायी जाती है। इन सेवाओं के लिए प्रवेश इस प्रकार होगा —

क्रमसंख्या २ – बर्तन के साथ केवल २ व्यक्ति।
३ – बर्तन के साथ केवल २ व्यक्ति।
४ – ६ – बर्तन के साथ केवल एक व्यक्ति।

सेवा क्रमसंख्या ८ – १० – प्रत्येक सेवा सम्पूर्ण दिन का उत्सव है। सेवा करानेवाले भक्त को प्रसाद दिया जायगा, जिस मे बडा, लड्डू, अप्पम दोसा इत्यादि होंगे। इस के अतिरिक्त सेवा न. ८ के लिए वस्त्र भी भेंट के रूप में दिया जायगा। सहस्र कलशाभिषेक, तिरुप्पाबडा तथा पवित्रोत्सव सेवाओं में हर एक सेवा को १० व्यक्ति जा सकते है।

साधारण सूचना –रिवाजो के अनुसार दातम (Datham) और आरती के लिये एक रुपये का अतिरिक्त शुल्क अदा करना पडेगा।

II उत्सव —

१	वसन्तोत्सव	रु 2500	४.	प्लवोत्सव	रु 1500
२.	कल्याणोत्सव	1000	५	ऊँजल सेवा	1000
३	ब्रह्मोत्सव	750			

जहाँ न पहुँचे रवि

श्री आर रामकृष्णा राव,
भिलाई.

कब से?
अनंत आकाश में,
प्रसवित,
प्रसरित,
काँति किरण,
आज हम,
देख रहे हैं!
दूर जितना ज्यादा है,
समय उतना अधिक होगा!
कवियों का स्वप्न,
भावनाओं कामनाओं को
पहचानने में,
कितने दशाब्द? और,
कितने शताब्द,
हम लेते हैं?
कवि हृदय,
कितना दूर सोचता,
व्यवस्था का आगे का स्वरूप,
कितना समझेगा,
उसे ग्रहण करना.
हमें उतना ही,
समय चाहिए!
कविता वेग से,
काँति वेग शायद,
मुकाबला कर नहीं सकता
इसलिए जब मैं,
विनीलाकाश में,
नक्षत्र को देखता हूँ,
तो मुझे एक-एक कवि याद आता है।

श्रीमद् वल्लभाचार्य के पुष्टिमार्ग की सेवा पद्धति

महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के दर्शन का सैद्धांतिक पक्ष जहाँ शुद्धाद्वैत कहलाता है, वहाँ उपासना अथवा साधन पक्ष में इसे 'पुष्टि-मार्ग' कहते हैं। अपने सम्प्रदाय के नामकरण की प्रेरणा आचार्यजी को श्रीमद् भागवत से हुई। भागवत में 'पुष्टि' अथवा पोषण को "भगवल्लीला" माना गया है। "पोषण तदनुग्रहः (भाग. २-१०-३-८) के अनुसार भगवान् के अनुग्रह को ही वास्तविक 'पोषण' या 'पुष्टि' बतलाया गया है। उन के मतानुसार जीव के हृदय में भक्ति का उदय भगवान् के अनुग्रह से ही हो सकता है। भगवान् का यह अनुग्रह ही 'पुष्टि' है। केवल कृपा अथवा अनुग्रह से साध्य इस मार्ग का स्वरूप विवेचन श्री आचार्यजी ने अपने अनेक ग्रन्थो में किया है। यथा 'सिद्धान्त मुक्तावली' में लिखा है— "अनुग्रहः पुष्टिमार्गे नियामकः" अर्थात पुष्टि-मार्ग मे एक मात्र भगवदनुग्रह ही नियामक है।

पुष्टिमार्ग में ब्रह्म सम्बन्ध अथवा 'आत्म निवेदन' का विशेष महत्व है। जीव अंहता-ममता त्याग कर परब्रह्म श्री कृष्ण के चरणो में अपना सर्वस्व समर्पण कर दीनता पूर्वक उनका अनुग्रह प्राप्त करना "ब्रह्म सम्बन्ध" कहलाता है। "ब्रह्म-सम्बन्ध" प्राप्त सेवको को ही भगवान श्री कृष्ण की सेवा करने का अधिकार प्राप्त होता है।

श्रीमती डा. एन. सि. सीता

तिरुपति

"श्रीनाथ" जी पुष्टि संप्रदाय के मान्य देवता है। श्रीनाथजी का स्वरूप श्रीकृष्ण के गोवर्धन धारण करने के भाव वाला है। अतः श्रीनाथजी को 'गोवर्धननाथ' भी कहा जाता है। श्री गिरिराज पर्वत का 'देवत' होने के कारण भी इन्हें श्री गोवर्धन नाथ नाम पड़ा है। श्री नाथ जी के अतिरिक्त श्री कृष्ण के अन्य सात स्वरूप पुष्टि सम्प्रदायो में मान्य है। ये सातो सेव्य स्वरूप इस प्रकार है—

१ श्री मथुरेश जी, २. श्री विठ्ठलनाथ जी ३ श्री द्वारकाधीश जी ४. श्री गोकुलनाथ जी, ५ श्री गोकुल चन्द्रमा जी, ६. श्री बालकृष्ण जी और ७. श्री मदन मोहन जी। ये सब सेव्य स्वरूप भूतल पर विराजमान पुरुषोत्तम श्री कृष्ण के प्रत्यक्ष स्वरूप माने जाते है। इसी लिए पुष्टि सम्प्रदाय में इन को 'मूर्ति' न कहकर 'स्वरूप' कहने की प्रथा है।

पुष्टि मार्गीय जीव ब्रह्म सम्बन्ध में दीक्षित होकर आत्मनिवेदन करने के पश्चात तनुजा, वित्तजा एव मानसी सेवा का अधिकारी हो पाता है, जिस में नवधा भक्ति की चरम स्थिति आत्मनिवेदन से उस की साधना का श्री गणेश होता है और अंत में अपने चरम लक्ष्य 'प्रेम लक्षणा' भक्ति को प्राप्त करता है। तनुजा वित्तजा और मानसी इन तीनो सेवाओं में अंतिम स्थिति मानसी सेवा की है। शरीरादि से की जानेवाली सेवा 'तनुजा' है। स्वोपार्जित द्रव्य से प्रभु को मंदिर, आभूषण और वस्त्रादि की सेवा वित्तजा सेवा है। मनसा, वाचा और कर्मणा केवल भगवान को ही अपना आराध्य

मान कर प्रतिक्षण उन का वियोगानुभव के मनस्ताप का अनुभव करना मानसी सेवा है। '(मानसी सा परा मता)' तनुजा और वित्तजा सेवाओं से जीव की अहंता-ममता नष्ट होकर भक्ति भाव दृढ़ हो जाता है। इन दोनों के सतत अभ्यास से बीज भाव पल्लवित पुष्पित हो कर भक्ति पादप का रूप धारण कर लेता है। प्रेम का प्रादुर्भाव होकर जीव कृतार्थ हो जाता है। प्रभु के प्रति रागात्मक बीज भाव-स्नेह आसक्ति एवं व्यसन दशा में परिणत होकर धीरे धीरे चरम स्थिति में पहुँच जाता है। ऐसी स्थिति ही मानसी सेवा की सिद्धावस्था अथवा प्रेमा भक्ति की एक अभिन्न वृत्ति या स्थिति है।

इस प्रकार पुष्टिमार्ग सेवा-विधि में तनुजा वित्तजा आदि की प्रेमात्मक साधनाओं में प्रारंभिक नवधा भक्ति की सभी भूमिकाओं का स्पष्ट अन्तर्भाव हो जाता है। भगवत् सेवा की नित्य जीवन चर्या में "श्रीमद् भागवत, श्री सुबोधिनी," यमुनाष्टक आदि का पाठ या श्रवण करना 'श्रवण' भक्ति है। इस से सेवा का प्रतिबंध उद्वेग का विनाश हो जाता है। सेवा में पद गान या कीर्तन 'कीर्तन' भक्ति के अन्तर्गत आते हैं। नित्य नियम के साथ शरण मंत्र—'कृष्णः शरण मम. और समर्पण मंत्र आदि का जप करना 'स्मरण' भक्ति है। भगवद् मंदिर में समार्जन करना, भगवत्प्रसादी वस्त्रों को धोना और शयन पर्यंत सब सेवा 'पाद सेवन' भक्ति है। पंचामृत स्नान, संकल्प, देवोत्थापन के समय मन्त्रोच्चारण, धूप दीप आदि का समर्पण अर्चन भक्ति का रूप है। प्रभु में दीनता रख कर नमस्कार करते रहना ही वंदन भक्ति है। प्रभु के साथ प्रतिक्षण अपनत्व का भाव रखना ही सख्य भक्ति है। देह, इन्द्रिय, अन्तःकरण, स्त्री, पुत्र, गृह, मित्र आदि को प्रभु सेवा के योग्य बनाना "आत्मनिवेदन" भक्ति कही जाती है।

इस प्रकार पुष्टि मार्गीय सेवा विधि में अन्य वैष्णव सम्प्रदायों के पूजा प्रवाह का रूप भी मिलता है। साथ ही पुष्टि मार्गीय सेवा का अभिप्राय, शास्त्रानुकूल क्रिया प्रधान अर्चना या

पूजा मात्र ही नहीं है अपितु भावप्रधान मेवा के द्वारा संपूर्ण आत्मविनियोग ही उस का लक्ष्य है।

पुष्टिमार्गीय सेवाविधि के दो क्रम है: — १ नित्य सेवा विधि और २ वर्षोत्सव सेवाविधि। प्रातः काल से शयन पर्यंत की सेवा नित्य सेवा है। वर्ष भर में विशेष अवसरो पर की जाने-वाली सेवा को वर्षोत्सव सेवा-विधि कहते है। नित्य सेवा-विधि में वात्सल्य भाव की प्रधानता रहती है। वर्षोत्सव सेवा विधि में श्री कृष्ण के नित्य और अवतार लीलाओ के उत्सव, षट ऋतुओ के उत्सव, लोक त्योहार और वैदिक पर्वों के उत्सव तथा राम, कृष्ण, नृसिंह, वामनादि अवतारो की जयन्तियाँ सम्मिलित है। इन दोनो प्रकार की सेवा-विधियो में तीन बाते प्रमुख है — १ श्रृंगार (वस्त्रालकार और आभूषणो का अलंकार २. भोग (भोज्य सामाग्री का समर्पण) और ३. राग (सगीत के द्वारा लीलागान)

श्रृंगार - विविध अलकारो से प्रभु स्वरूप को अलकृत करने की विधि को श्रृंगार कहते है।

भोग — उत्तमोत्तम भोज्य पदार्थों को शुद्ध रूप से तैयार कर वात्सल्य के साथ उन्हें विधि पूर्वक श्रीकृष्ण को समर्पित करना 'भोग' कहलाता है।

राग — पुष्टि मार्ग में स्वरूप सेवा का प्रमुख अंग है राग। श्री प्रभु का लीला गान एवं कीर्तन नाना प्रकार के वाद्ययन्त्रो द्वारा विविध राग - रागनियो में किया जाता है।

उक्त तीनों प्रकार की सेवा पर आधारित नित्य सेवा में मंगला, श्रृगार, ग्वाल, राजभोग, उत्थापन, भोग, सांध्य आरती और शयन — ये आष्टायाम सेवा के आठ दर्शन पुष्टिमार्ग में निर्दिष्ट है।

मंगला — इस दर्शन में प्रातः काल होते ही शंखनाद से भगवान को जगाया जाता है। तदनंतर भगवान का हलका श्रृंगार होता है। दूध, मिश्री माखन आदि का भोग लगता है। इस समय जागरण, अनुराग और दधि मंथन के पद गाये जाते हैं।

श्रृंगार — भगवान को स्नान कराकर श्रृंगार किया जाता है, ऋतु अनुसार वस्त्रा-भूषणों का अलंकार धारण कराये जाते है।

श्रीवेंकटेश्वर स्वामीजी का मंदिर, मंगापुरम्.

दैनिक पूजा एवं दर्शन का कार्यक्रम

शनि, रवि, सोम, मंगल तथा बुधवार

प्रात :	५–००	से	५–३०	सुप्रभात
,,	५–३०	,,	६–००	विश्वरूप सर्वदर्शन
,,	६–००	,,	६–३०	तोमाल सेवा
,,	६–३०	,,	६–४५	कोलुवु तथा पंचागश्रवण
,,	६–४५	,,	९–३०	सहस्रनामार्चना
,,	९–३०	,,	१०–००	पहली घंटी
,,	१०–००	दोपहर	१२–३०	सर्वदर्शन
दोपहर	१२–३०	,,	१–००	दूसरी अर्चना व दूसरी घंटी
	१–००	शाम	६–००	सर्वदर्शन
	६–००	,,	७–००	रात का कैंकर्य व रात की घंटी
	७–००	,,	८–४५	सर्वदर्शन
	८–४५	,,	९–००	एकांतसेवा

गुरुवार

प्रात:	५–००	से	५–३०	सुप्रभात
,,	५–३०	,,	६–००	विश्वरूप सर्वदर्शन
,,	६–००	,,	६–३०	पूलंगि समर्पण (तोमाल सेवा)
,,	६–३०	,,	६–४५	कोलुवु तथा पंचांग श्रवण
,,	६–४५	,,	९–३०	सहस्रनामार्चना
,,	९–३०	,,	१०–००	पहली घंटी
,,	१०–००	दोपहर	१२–३०	सर्वदर्शन
दोपहर	१२–३०	से	१–००	दूसरी अर्चना व दूसरी घंटी
,,	१–००	,,	६–००	सर्वदर्शन
,,	६–००	,,	७–००	रात का कैंकर्य व रात की घंटी
,,	७–००	,,	८–४५	सर्वदर्शन
,,	८–४५	,,	९–००	एकांतसेवा

शुक्रवार

प्रात:	५–००	से	५–३०	सुप्रभात
,,	५–३०	,,	६–००	विश्वरूप सर्वदर्शन
,,	६–००	,,	९–००	सालिंपु, नित्यकट्ल कैंकर्य व पहली घंटी
,,	९–००	,,	१०–००	अभिषेक
,,	१०–००	,,	११–३०	समर्पण (तोमाल सेवा), दूसरी अर्चना व दूसरी घंटी
,,	११–३०	से शाम	६–००	सर्वदर्शन
शाम	६–००	,,	७–००	रात का कैंकर्य व रात की घंटी
,,	७–००	,,	८–४५	सर्वदर्शन
,,	८–४५	,,	९–००	एकांत सेवा

सूचना :—

अर्जित सेवाओं की दरें :—

१) शुक्रवार के साप्ताहिक अभिषेक रु. १००/– (दो व्यक्तियो को प्रवेश)
२) अर्चना रु. ३/ ३) हारती रु. १/ ४) नारियल तोडना रु. ०–५०/
५) भगवान को प्रसाद (भोग) समर्पण भी किया जाता है ।

पेष्कार, श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी का मंदिर, मंगापुरम्

इसे श्रृंगार की झांकी कहते है । इस समय सूखे मेवे का भोग लगता है । वेणु धारण कराकर दर्पण दिखाया जाता है । इस अवसर पर बाल छवि, बाल क्रीडा और वेष - भाषा के पद गाये जाते है ।

ग्वाल — भगवान को वस्त्राभूषणो से श्रृंगार करके ग्वाल बाल सहित खेल के दर्शनों को ग्वाल की झाकी कहते है । इस दर्शन में धूप - दीप होती है । सखरी (कच्चा भोजन) लड्डू, बासुदी, दूध और सखडी (दाल - भात आदि) आदि भोज्य पदार्थों का भोग कराया जाता है । इस समय गोचारण, गो - दोहन, माखन चोरी, चौगान (मैदान) चकडोरी आदि के पद गाये जाते है ।

राज भोग — भगवान के पुष्पमाला दर्शन के पश्चात ये दर्शन होते है । ठौर (दूध और आटे की मीठी रोटी) मकखन, सूखा मेवा, फल, शाक एव बीडा भोग में रखे जाते है। इस प्रकार मद्याह्न के भोग की झांकी को 'राज भोग' कहते है । इस में छाक (वन भोजन) के पद कीर्तन में गाये जाते है ।

उत्थापन — राज भोग दर्शन के पश्चात मद्याह्न में भगवान कुछ समय तक विश्राम करते है । दोपहर के पश्चात् साध्य पूर्व ४ बजे के आस पास शंखनाद से भगवान का उत्थापन होता है । इस को उत्थापन की झांकी कहते हैं । फल, दूध की बनी मिठाइयाँ, पपडी, शकरपारे फल, शाक आदि भोग रखे जाते हैं । इस में बनलीला, गोटेरन के पद गाये जाते हैं । इन को आछनी के पद भी कहा जाता है ।

भोग — इस समय में भगवान का पूलों से श्रृंगार किया जाता है । गर्मी में फव्वारे, शीतकाल में अगीठी रखी जाती है । ठोड और फल का भोग लगता है । इस भोग की झाकी के समय मुरली गाथ, गोप और गोपियों से सम्बन्धित पदो का गान किया जाता है ।

संध्या आरती - श्री कृष्ण के गौ चराकर लौटने के समय माता यशोदा लाला की बलैया लेती है, यही भाव इस दर्शन में दर्शाया जाता है । श्रावण मास में इस समय झूला दर्शन भी होते है । उत्सव के समय भोग और आरती के दर्शन साथ साथ होते है। सखडी, अनसखडी (कच्चा तथा दूधका) दोनो प्रकार

(शेष पृष्ट ३५ पर)

ज्ञान भिक्षा

कबीर साहब के इस भजन पद का स्वरूप अब यहाँ बदल रहा है।

बिनु चरणन को दइ दिश धावै।
बिनु लोचन जग सूझै
संशय उलटि सिंह को ग्रासे
इ अचरज कोई बूझे ॥

कबीर साहब आत्मा के स्वरूप के दर्शन कराने वाले इन शब्दों का वर्णन करते हैं।

आत्म स्वरूप जिसे हम निज स्वरूप कहते हैं। वह कैसी अद्‌भुत शक्ति वाला है। इस संबंध में साहब कहते है कि आत्म स्वरूप के कोई शरीर नही होता वह स्वयं अशरीरी है। मैं इसी स्वरूप की पहचान कराता हूँ।

आप कौन हैं? आप वर्तमान में जिस शरीर पर आरूढ हो या जिस शरीर में निवास कर रहे हो वह शरीर अपनी स्वयं की शक्ति से कोई काम नहीं करता है। यह केवल तुम्हारी ही शक्ति से क्रियाशील है।

यह आपकी वासनामय इच्छा से ही जगत से तादात्म्य रखकर किया करता है। जगत से भी यह इसी कारण सारा कार्य करता है।

शरीर आत्मा नही है क्योंकि शरीर की स्वयमेव कोई चेतन शक्ति नहीं होती है।

जिस प्रकार इस जगत में पृथ्वी, जल, तेज वायु और आकाश पर परमात्मा की सत्ता व्यापक है, तदनुसार ही क्रिया एवं गति होती है। इस प्रकार अंतर जगत में आत्मा क्रियाशील है।

जैसे कि साहब ने कहा है, बिनु चरणन को दस दिश धावे।

जो चेतना है उसका कोई शरीर नहीं होता फिर भी वह बिना पैर के दशों दिशाओं में गमन करता है। वह इस प्रकार कि—

जिस प्रकार एक समुद्र है, समुद्र की लहरें प्रत्येक दिशा में दौडती है, परन्तु वे समुद्र के बाहर नहीं दौड सकती है। इसी प्रकार जीवात्मा की दौड समुद्र रूपी परमात्मा के अन्दर ही होती है। इसी से उसके कोई भी हाथ पैर नही होते हैं।

परमात्मा सर्वत्र व्याप्त है; इसी से समुद्र की लहरे जिस प्रकार सभी दिशाओं में दौडती है उसी प्रकार चेतन रूपी लहरें सभी दिशाओं में दौडती है।

हाथ और पैर तो उनके होते है। जिसका स्थूल शरीर होता है। परन्तु वह चेतन नहीं होता चेतन की इच्छा ही सर्वत्र कार्य करती है।

श्री केशवदेव कीर्तनकार [पुजारी]
कवांट.

साहब हमें चेतन की पहचान कराते है। इसी में बराबर लक्ष रखकर साधक को चलना चाहिये। इसी में लक्ष रखना चाहिये।

"बिनु लोचन जग सूझे"

पहले साहब ने बिना हाथ पैर के सर्व दिशाओ में स्मरण करने को कहा। अब आँख बिना सारे जगत को देखने की बात साहब समझाते है।

जब आप आप के अन्दर की छिपी हुई चेतन शक्ति को समझने का ज्ञान प्राप्त कर लेगे, तब आप सम्पूर्ण जगत को आपके अन्दर दर्शन कर सकेंगे।

बाह्य जगत का दृश्य समस्त अज्ञान अवस्था में है। कारण बाहर का समस्त खेल माया रचित प्रपंच है।

आप कहेंगे बाह्य जगत प्रत्यक्ष दृश्यमान है यह मिथ्या किस प्रकार हुआ।

लेखक, कवि तथा चित्रकार महोदयों से

निवेदन

सप्तगिरि मास-पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख कविता तथा चित्र भेजनेवाले महोदय निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें :—

१) लेख, कवितायें – साहित्य, अध्यात्म, दैवमंदिर तथा मनोविज्ञान – विषयों से संबंधित हों।

२) रचनाएँ, लेख अथवा कविता के रूप में हों।

३) लेख ४ पृष्ठों से अधिक न हों

४) पृष्ठ की एक ही ओर लिखना चाहिए।

५) लेख, चित्र व कविताओं को उचित पारिश्रामिक दिया जायगा।

६) यदि छाया चित्र भेजे जाय तो उनके संबंध में पूरा विवरण अपेक्षित है।

७) किसी विशिष्ट त्योहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए तीन महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।

— सपादक, सप्तगिरि

इसका एक उदाहरण इस प्रकार कि स्वर्ण या मिट्टी इन दोनों के सभी आभूषण वास्तव में मिट्टी अथवा स्वर्ण ही हैं। इसी प्रकार आप स्वयं चेतन है। आप की इन शक्तियो का जब आप को ज्ञान होगा, उस दिन से आप बिना नेत्र के सारे जगत को देख सकेंगे।

जगत आपके ज्ञान चक्षू के बाहर की वस्तू नहीं है। जगत को ज्ञान चक्षू के द्वारा देख सकते है अपितु परमात्मा का भी ज्ञान चक्षुओ के द्वारा दर्शन किया जा सकता है।

जगत तो केवल परमात्मा का रचनात्मक कार्य अथवा खेल है। आगे साहब कहते है कि

बैठी गुफा में सब जग देखे
बाहर किछुक ना सूझे ॥

साहब की विचार धारा के अनुसार हमें चलना है। नहीं तो हम गफलत में पड जायेगे इससे—

'सतो जागत निंदन कीजै'

आप किसी प्रकार का संशय नही करें जिस प्रकार सिंह को बकरी अथवा गाय खाती है यह किस प्रकार शक्य है वह हमें साहब इस प्रकार समझाते है।

साहब ने यह उल्टे शब्दो की रचना की है। यहाँ सासारिक बकरी अथवा गाय हमें नहीं समझना है। यहाँ केवल उनका सबोधन मात्र किया गया है।

एक दूसरे स्थान पर साहब इस प्रकार समझाते है कि—

एक अचरज तुम देखो भाई
देखत सिंह चरावत गाई ॥

साहब का यहाँ यह अभिप्राय है कि जीवात्मा वासनामय अज्ञानदशा में है वहाँ तक मायारूपी गरीब दिखनेवाली गाय ससार के मिथ्या पदार्थ का भोग कराती है। परन्तु जब उसे अपने सत्य स्वरूप जिसे साहब ने सिंह शब्द से सबोधित किया है उसे जाने बिना व्यर्थ का प्रपंच है।

आत्म ज्ञान एक ऐसा अद्भुत ज्ञान है और ब्रह्मज्ञान तो आत्म ज्ञान से भी अद्भुत ज्ञान है। इस ज्ञान की सीमा में पहुचने के बाद आपको आपका स्वयं का घर नजर आवेगा। यहाँ सीमा का अर्थ आत्म स्वरूप के नजदीक की सूझे से है।

साहब ने गुफा शब्द कहा है इसका वर्णन इस प्रकार है।

साहब कहते है कि जीवात्मा का असली स्वरूप तो आत्मा ही है। यह जहाँ तक अज्ञान दशा में है वही तक माया उल्टी चलती है। शब्द को साहब ने तीन प्रकार से सबोधित किया है।

१) उल्टा शब्द का अर्थ माया है।
२) उल्टा शब्द से बकरी तथा गाय का भी संबोधन किया है।
३) उल्टा शब्द स्वरूप स्थिति पर का है। इसीसे उसका अर्थ उसी स्थिति में घराया गया है।

साहब कहते है कि जो बात विचार धारा से कही है वह विचार धारा से ही आपको समझना है इसके जानकार कोई विरल ही मिलेगें। शेष सभी को यह अचरज ही लगेगा।

औंधा घडा नहिं जल बूडै
सीधे सो जल भरीया।
जोहि कारण नर भिन्न भिन्न करे
सो गुरु प्रसादे तरीया ॥

साहब कहते है मेरी बताई हुई रीति के अनुसार ही आप इस ज्ञान को प्राप्त कर सकेगे यदि इसके अर्थ का अनर्थ करेगें तो औधे घडे के समान जिस प्रकार की औंधा घड़ा जल में नहीं डूबता है। उसी प्रकार आपको कोई लाभ नहीं होगा। यदि आप सीधी रीति से चलेंगे तो इस ज्ञान का लाभ अवश्य प्राप्त कर सकेंगे।

(पृष्ठ १३ का शेष)

कपट से दूर रहना चाहिये। यह है प्रत्येक मनुष्य को मनुष्यता के पूर्ण आकारपर्यंत विकसित होने का मर्यादापथ। इससे मानव मानव बनता है तथा वैष्णव बनता है।

विश्व का कल्याण कैसे हो? ऐसा शुभविचार सर्वदा करना चाहिये। अधिकार नहीं, कर्तव्य, सेवा नहीं, सेवा; स्वार्थ नहीं, परमार्थ; इस दृष्टिकोण को अपने सामना रखकर सारे विश्व को ही अपना उपास्य समझना एवं यथाशक्ति सबका हित-साधन-आराधन करना चाहिये। विपत्ति में डरना नहीं; भगवान की कृपा पर सदा परम विश्वास रखना और सबकी सेवा के लिये सदा तत्पर रहना। सर्वसाधारण प्राणियो की सेवा की अपेक्षा भी आपत्तिग्रस्त प्राणी को विशेषरूप से सेवा करनी चाहिये। प्यासे को पानी, भूखेको भोजन, अतिथि का सत्कार करना चाहिये भगवत्सेवा के भाव से। अच्छे कार्य में सबको सहयोग देना चाहिये।

विश्वरूपी परमेश्वर की सेवा पूजा में अपने' तन, मन, धनको 'पत्रं पुष्पं' भाव से नैवेद्य रूपसे समर्पण करना। सारी सम्पत्ति का स्वामी परमात्मा है। हम लोग एक विश्वासी व्यवस्थापक (Managing Trustee) है—ऐसा विशुद्ध भाव रखना चाहिये। इस से अहता-ममता चली जाती है। फिर अपने लिए कुछ भी नहीं रहता। इस से भी आगे बढ़कर साक्षात् परमात्मा की शरणागति स्वीकार करके सर्वस्व समर्पण कर देना चाहिये। यही 'भागवत-धर्म' है। इस महामहिम, सर्व श्रेयस्कर, सार्वजनीन परमधर्म भागवत धर्म की जय-जयकार हो। ★

(पृष्ठ ३२ का शेष)
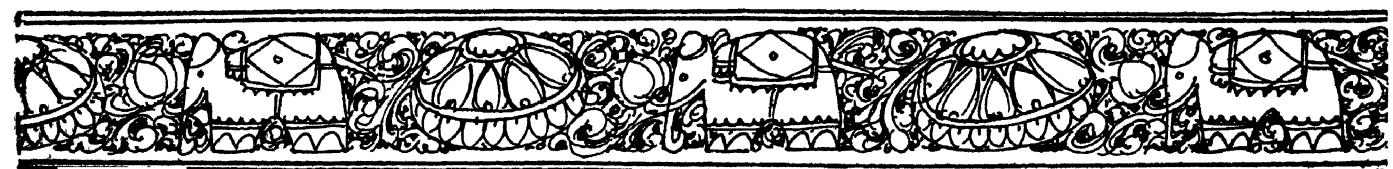
की सामग्री का भोग लगता है। इस समय वात्सल्य भाव से यशोदा का कृष्ण को बुलाना कृष्ण का वन से लौटना, गो दोहन आदि के पदों का कीर्तन होता है।

शयन — रात्रि को शयन की झाकी होती है, जिस में अनुराग के भावपूर्ण पद, गोपी भाव निकुज लीला आदि के पदो का गायन होता है। इस प्रकार शयन की झांकी के साथ नित्य सेवा विधि सपन्न होती है।

जैसा कि कहा जा चुका है श्रीनाथ जी पुष्टि सप्रदाय के आराध्य देवता है। सं १५५० के लगभग गोवर्धन गिरिराज पहाडी पर एक भगवद् स्वरूप का प्रकाट्य हुआ था। समस्त भारत के अपने द्वितीय पर्यटन के समय श्री वल्लभाचार्य जी गिरिराज गोवर्धन गये थे और उस स्वरूप को दर्शन किये थे। उन्होने उस स्वरूप का नाम 'श्री नाथ' रखा। उस स्वरूप की पूजा-सेवा का प्रबन्ध करवाया। श्रीनाथ जी की सेवा के साथ शृंगार, भोग और राग की आवश्यक व्यवस्था भी की थी। उन के पश्चात् उनके पुत्र विट्ठलनाथ जी ने सेवा विधि का विस्तार किया। पुष्टिमार्ग में सेवा की अन्य विधियों के साथ साथ कीर्तन पद्धति भी प्रचलित हुई। भगवान की आठो झांकियों के समयो पर विभिन्न राग-रागिनियो में पद गान करने का विधान पुष्टि मार्ग में है। इस केलिए श्री विट्ठलनाथ जी ने अपने पिता के चार और अपने चार सेवक जो सगीत कला के मर्मज्ञ थे सम्मिलित कर 'अष्टछाप' के नाम से एक कीर्तन मडली की स्थापना की। वे आठों कवि महानुभाव समय समय पर कीर्तन किया करते थे। आज भी पुष्टिमार्गीय मंदिरो में अष्टायाम सेवा में इन्हीं आठो महानुभावो के रचित पद गाये जाते है। ये लीला पद श्रीमद् भागवत की दशम स्कंधीय लीला पर आधारित है।

इस प्रकार पुष्टि संप्रदाय में सेव्य स्वरूप की सेवा बडी श्रद्ध निष्ठा और भाव तन्मयता के साथ की जाती है। इसीलिए पुष्टि संप्रदाय वैष्णव संप्रदाय चतुष्टयी में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। ✡

जो करेगा सो भरेगा

बी. वी. वी. यस. यस. सत्यनारायण मूर्ति एम. ए,
विजयवाडा

शिष्टाचार, निष्ठा-गरिष्ठ, अष्टैश्वर्य संपन्न लंकेश्वर
पर अपुरूप सुदरी जानकी देवी का अपहार
धिक-धिक यह तुच्छ इच्छा तेरी
तेरी मति भ्रष्ट हुई लका निकृष्ट हुई ॥

धर्मज्ञ है यमधर्मराज तनुज धर्मराज
अस्थिर साम्राज्य हेतु बोला असत्य
निज गुरु का मरण कारक बना अजात शत्रु
नाक के पहले नरकगामी होना पडा ॥

द्यूत व्यसन का पर्यवसान भोगा नल ने
पुष्कर के हाथों में निष्कल हराया गया
निष्कर्ष भगा दिया सगा बंधुत्व तोडकर
निवास छोडकर वनवास करना पडा ॥

वन्य मृगों का वध करने वन गया
अन्य मृगों के साथ अन्याय ही
दिव्य मृग रूपधारी मुनि दंपति पर
अस्त्र चलाकर शापग्रस्त हुआ पांडुराज ॥

किया सहस्र क्रतु पाया स्वर्गाधिपत्य
गया नही अहंभाव, निर्लज्ज, निर्भय
ढुलाया नहुष ने सप्तर्षियों से निज वाहन
खोया काय बना हाय सर्प स्थूलकाय ॥

सत्यवादी होकर हरिश्चन्द्र, दानी बनकर शिबि,
धर्मशील होकर कई आचन्द्रार्क स्थिर रहे,
किये कर्म से मानव बनता दानव या देवता
सोचो यह सच है, "जो करेगा सो भरेगा"।

ति. ति. देवस्थान के विविध - मन्दिरों में अर्जित सेवाओं की दरें तथा कुछ नियम निम्नलिखित रूप से परिवर्तित की गयीं।

श्री पद्मावती देवी का मन्दिर, तिरुचानूर.

अर्चना	रु १–००
हारती	रु ०–५०

श्री गोविन्दराज स्वामी मन्दिर, तिरुपति.

तोमाल सेवा	रु ४–००	(एक टिकट)
अर्चना	रु ४–००	”
एकांतसेवा	रु ४–००	”
विशेष दर्शन	रु २–००	”

श्री बालाजी का मन्दिर, तिरुमल.

तिरुमल पर विराजमान श्री बालाजी के मन्दिर में अब तक रु २००/- चुकाकर मनानेवाली आर्जित सेवा में भाग लेने केलिए २ व्यक्तियों को प्रवेश है।

ति. ति. देवस्थान, तिरुपति.

तिरुमल में श्री बालाजी का ब्रह्मोत्सव :

तिरुमल में श्री बालाजी के वार्षिक ब्रह्मोत्सव ता० २३-९-७९ से १-१०-७९ तक अति वैभव से मनाया गया। तिरुमल, तिरुपति व तिरुचानूर प्रांत इस महोत्सव के कारण शोभायमान रहे।

स्वामीजी के दर्शनार्थ आनेवाले भक्त जनो की सुविधा के लिए विस्तृत रूप में प्रबध करने के कारण किसी प्रकार के गडबड के बिना ही उत्सवो की परिसमाप्ति हुई।

रंग-बिरंगे विद्युद्दीपो से अलंकृत श्रीवारि मंदिर, होमादि कार्यक्रम, निरंतर मंत्रोच्चारण, विविध वाहनों पर स्वामीजी को देवेरियो सहित सुबह व शाम को जुलूस निकालने, डोलोत्सव, पुराण प्रवचनादि कार्यक्रम—ये सभी तिरुमल के पवित्र वातावरण की शोभा को बढा ही न दिया, बल्कि भूतल पर उतरे हुए स्वर्ग जैसा प्रतीत हुआ है।

साधारणतया ब्रह्मोत्सवों के अवसर पर यात्रियो की सेवा के लिए कर्मचारियों को बाहर से लाकर नियुक्ति कर रह थे। लेकिन इस साल तिरुमल पर रहे कर्मचारियो से ही उत्सवो का परिपूर्ण रूप से निर्वहण किया गया है। कई लोगो के दर्शनार्थ विविध भक्ति कार्यक्रमों को टेलिविजन के द्वारा क्यू षेडस व अन्य मुख्य प्रातों में प्रसार किया गया है।

सुबह और दोपहर को पुराण प्रवचन, शाम को हरिकथा गान व संगीत कचेरी धर्म रक्षण संस्था के आध्वर्य में आर्ष सस्कृति सदस्सु के भवन में निर्वहण किया गया। इन दस दिन के कार्यक्रम में सर्वश्री संद्यावंदनं श्रीनिवास राव (गात्रं), नेकूरि कृष्णमूर्ति, पशुपति, श्रीरंगं गोपालरत्नं, एम. एल. वसंतकुमारी, एम, एस. सुब्बुलक्ष्मी जैसे प्रमुख गान कोविद, महामहोपाध्याय श्री ईमनी शंकर शास्त्री, चिट्टिबाबु, आर. कृष्णमूर्ति, लालुगुडि जयरामन, टी एन कृष्णन् जैसे वाद्य कलाविशारद ने इन कार्यक्रमों में भाग लिये। इसके अलावा हरिकथा गान कार्य क्रम भी है। सर्वश्री पेंड्टि दीक्षित दासु, कूचिबाट्ल कोटेश्वरराव, राजशेखरुनि लक्ष्मीपति राव, वीरगंध वेकटसुब्बा राव, श्रीमति आर. सुब्बाराव जैसे प्रमुख भागवतारों भी भाग लिया। इसके अलावा और दो मुख्य कार्यक्रम इस साल के ब्रह्मोत्सव में है। पहला यह है कि देवस्थान के द्वारा धार्मिक प्रचार कार्यक्रम के लिए प्रकाशित की गयी सुंदरकांडा (तेलुगु) के प्रमुख रचयिता श्री उषश्री को ३०, सितबर को सन्मान करना। दूसरा यह है कि बालाजी के भक्त व तेलगु साहित्य के पदकविता पितामह ताल्लपाक श्री अन्नमाचार्यजी की सकीर्तनाओ के प्रचार के लिए ग्रामफोन रिकार्डों में निकालने की प्रणाली में सुप्रसिद्ध सगीत साम्राज्ञी श्रीमती एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी के द्वारा गाया गया पहला लाग प्ले रिकार्ड "पंचरत्नमाला" को उद्घाटन करना है। १, सितंबर से लेकर ८, अक्तूबर तक विविध प्रदेशों में अर्थात् नई दिल्ली, हैदराबाद, मद्रास, पुटपर्ति में इन रिकार्डों का उद्घाटन किया गया।

इन ब्रह्मोत्सवो में और एक महान कार्य है, देवस्थान के आस्थान विद्वान पडित श्री वेदान्तं जगन्नाथाचार्युल् को देवस्थान के द्वारा सन्मान करना। २६, सितबर को कल्पवृक्ष वाहन सेवा के दिन स्वामीजी के मदिर के तिरुमलराय मडप में निर्वहण किये गये इस कार्यक्रम में कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री प्रसादजी ने २८ हजार रुपयो की नगदी धन तथा भगवान जी के सकल प्रसादो से अति वैभव से सत्कार किया। आचार्य जी के लम्बी समय की सेवा के चिह्न के रूप में यह विशेष गौरव मिला।

ब्रह्मोत्सव के सदर्भ में सरकार स्वास्थ्य विभाग ने एक प्रदर्शन का निर्वहण किया। देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी. वी. आर के प्रसाद जी ने इसका उदघाटन किया।

धर्मरक्षण सस्था के आध्वर्य में समाचार केंद्र :

ति. ति देवस्थान के सभी समाचार केंद्रो को देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी के नये आदेशानुसार हिन्दू धर्म रक्षण सस्था के आध्वर्य में रखा गया। इसके अनुसार तुरत ही सभी समाचार केंद्र धर्म रक्षण सस्था में विलीन हो जायगा। इसी प्रकार देवस्थान के कल्याणमंडपों को भी धर्म रक्षण सस्था से लगा गया। धर्म रक्षण सस्था के जिला निर्वाहकों के पर्यवेक्षण में आगे से समाचार केंद्र तथा कल्याणमंडप के कर्मचारियों को काम करना पडेगा। उनके वेतन या अन्य खर्च धर्म रक्षण संस्था के द्वारा देने का प्रबध भी हो रहा है।

आगामी फरवरि में मनाये जानेवाले स्वाध्याय ज्ञान यज्ञ के लिए यज्ञ वाटिका को जोतते हुए श्री चन्द्र मौली रेड्डीजा, देवादायशाखा के कमीशनर.

ति. ति. देवस्थान की निर्वाहक मण्डलि के प्रमुख निर्णय

दास साहित्य विभाग को अन्नमाचार्य प्राजेक्ट में मिलाने का निर्णय लिया गया। जिसमें कि भगवान बालाजी के भक्त कवियों के पूरे साहित्य का अध्ययन, शोध-कार्य, प्रचार व प्रकाशन का कार्य निर्वहण कर सके।

हिन्दू धर्म प्रचारक शिक्षण संस्था में कुछ व्यक्तियों को प्रवेश देकर मंदिर में भगवान की वेद शास्त्रोक्त पूजा के बारे में शिक्षण देने का निर्णय लिया गया।

श्री गोविंदराजस्वामी जी के मंदिर के उप-मंदिर में विराजमान श्री आनंदाल्वार के समान श्री मधुरकवि आल्वार को सात्तमोरै के दिन पर नैवेद्य तथा बहुमान समर्पण करने का निर्णय लिया गया।

पोर्टब्लैर (अण्डमान) स्थित श्री राधा गोविंद मंदिर का निर्वहण भार अब के बदले हुए परिस्थितियों में न लेने का तथा कल्याणमडप के निर्माण के लिए दानादाय निधि के मति को लिखने के लिए सूचित करते हुए निर्णय लिया गया।

वेद पारायणदारों को भी वेदपंडितों के समान वेतन देने का निर्णय लिया गया।

स्वमीजी के अभिषेक के लिए "दक्षिणावर्त शंख" तथा एक अष्टोत्तर दक्षिणावर्त शंख हार (१०८ दक्षिणावर्त शंखों की माला)को तैयार करने का निर्णय लिया गया। इसके बारे में जिय्यंगारजी तथा अर्चकों से बात करने के लिए कार्यनिर्वहणाधिकारी को सुझाव दिया गया।

"पद्मावती श्रीनिवासम्" को कूचिपूडि आर्ट अकाडमी, मद्रास के द्वारा प्रदर्शन करने के लिए आवश्यक आभूषण तथा वस्त्र खरीदने के लिए रु. १५००० की आर्थिक सहायता देने का निर्णय लिया गया।

श्री नूकल चिन सत्यनारायण, प्रिन्सिपाल सरकारी संगीत नृत्य कलाशाला, हैदराबाद, श्री शम्मगूडी श्रीनिवास अय्यर, श्री टी एस मणि अयर, मृदंग विद्वान और श्री महा-राजपुरम सतानम् को देवस्थान के आस्थान विद्वान पद देने का निर्णय लिया गया।

(पृष्ठ ३७ का शेष)

तिरुमल व तिरुपति में कूचिपूडि नृत्य प्रदर्शन :

चिरंजीवी के रामानुजम् (नौ वर्ष) तथा चि के. श्रीनिवासन (आठ वर्ष) ने तिरुमल के आर्ष सदस्सु हाल में दिनांक ८-१०-७९ को कूचिपूड़ि नृत्य का प्रदर्शन किया। इतनी छोटी सी उम्र में उन्होने हाव-भाव युक्त अंग प्रदर्शन करके प्रेक्षको को मुग्ध किया। इसकी एक विशेषता यह है कि चि. श्रीनिवासन् ने स्त्री वेष धारण करके नृत्य किया जो अति प्रशंसनीय रहा। वैसे ही दिनांक १०-१०-७९ को तिरुपति के श्री अन्नमाचार्य कलामंदिर में चि के. श्रीनिवासन् ने कूचिपूड़ि नृत्य का प्रदर्शन किया। स्त्री वेषधारण करके (चित्र में देखिए) उन्होंने हाव-भाव दिखाकर नृत्य करके, बड़ों का आशीर्वाद पाया। अंतर्जातीय बाल वर्ष में इन दोनो का नृत्य प्रदर्शन एक विशेषनीय बात है।

(शेष पृष्ठ ४० पर)

मासिक राशिफल

नवंबर १९७९

*डा० डी. अर्कसोमयाजी. तिरुपति.

मेष
(आश्वनी, भरणी, कृत्तिका केवल पाद-१)

राहु के द्वारा क्लेश। शनि के द्वारा ३ तक भलाई, स्वस्थता व विजय। गुरु के द्वारा भलाई, धन प्राप्ति, गौरव, नूतन वस्त्र, श्रृगार व वाहन प्राप्ति या घर या संतान। कुज के द्वारा हानि, अस्वस्थता या पेट में दर्द या बुखार या बुरे मित्रों के द्वारा कष्ट, ६ से सतान के द्वारा या शत्रुओ के द्वारा आदोलन। रवि के द्वारा १६ तक प्रयाण या उदर पोडा, बाद में अस्वस्थता या पत्नी को असतोष। शुक्र के द्वारा भलाई, नूतन वस्त्र या श्रृगार व धन प्राप्ति। बुध के द्वारा २३ तक भलाई, विजय व धन प्राप्ति व नूतन वस्त्र या सतान, बाद में झगडे।

वृषभ
(कृत्तिका पाद-२, ३, ४, रोहिणी, मृगशिरा पाद-१,२)

राहु के द्वारा झगडे। शनि के द्वारा सतान से अलगाव या झगडे व धन हानि। गुरु के द्वारा मानसिक अशाति। कुज के द्वारा ६ तक धन प्राप्ति, बाद में बुखार या उदर पीडा या बुरे मित्रों के द्वारा कष्ट। रवि के द्वारा १६ तक स्वस्थता, विजय, बाद में प्रयाण वा उदर पीडा। शुक्र के द्वारा २३ तक हानि, स्त्री के कारण आदोलन, बाद में श्रृगार या नूतन घर। बुध के द्वारा २३ तक झगडे, बाद में विजय।

मिथुन
(मृगशिरा पाद-३ ४, आर्द्रा, पुनर्वसु पाद-१,२,३)

राहु के द्वारा धन प्राप्ति। शनि के द्वारा मित्रों से अलगाव या धन हानि या सतान से अलगाव। गुरु के द्वारा हानि तथा निराशा। कुज के द्वारा ६ तक बुराई, नौकरी में या शत्रुओ के कारण आदोलन, या घर में चोरी, बाद में संतान के द्वारा या अक्रम पद्दति से धन प्राप्ति। रवि के द्वारा १६ तक बुराई, अस्वस्थता के कारण या शत्रुओ के कारण आदोलन, बाद में स्वस्थता व विजय। शुक्र के द्वारा २३ तक बुराई, अस्वस्थता या अगौरव, बाद में स्त्री के कारण कष्ट। बुध क द्वारा २३ तक भलाई, विजय या पद, बाद में पत्नी या सतान से झगडे।

कर्काटक
(पुनर्वसु पाद-४, पुष्य तथा आश्लेष)

राहु के द्वारा धन हानि। शनि के द्वारा ३ तक भलाई, धन प्राप्ति, पद या वाहन, स्वस्थता। गुरु के द्वारा धन व विजय। कुज के द्वारा नौकरी में या अन्य प्रकार से आदोलन या घर में चोरी या अस्वस्थता। रवि के द्वारा अस्वस्थता या अस्वस्थता के कारण आदोलन। शुक्र के द्वारा २३ तक भलाई, रिश्तेदारो का आगमन, बडो की प्रशसा, धन व मित्र प्राप्ति, या सतान प्राप्ति, बाद में अस्वस्थता व अगौरव। बुध के द्वारा २३ तक बुराई, पत्नी या संतान से झगडे, बाद में धन प्राप्ति व घर में वस्तु समृद्धि।

सिंह
(उत्तर फल्गुनि पाद-१, मख, पूर्व फल्गुनि)

राहु के द्वारा कष्ट। शनि के द्वारा धन हानि। गुरु के द्वारा झगडे धन हानि या पद भ्रष्टता। कुज के द्वारा बुराई, धन हानि या अस्वस्थता। रवि के द्वारा १६ तक भलाई, धन प्राप्ति व पद, बाद पद में अस्वस्थता शुक्र के द्वारा भलाई, अच्छे मित्र, रिश्तेदारो का आगमन, बडों की प्रशसा, धन व संतान प्राप्ति। बुध के द्वारा २३ तक धन प्राप्ति, घर में वस्तु समृद्धि, बाद में मित्रों के होने पर भी अपने बुरे कार्यो के कारण आंदोलन।

कन्या
(उत्तरा पाद-२,३,४, हस्त चित्त पाद-१, २)

राहु के द्वारा आदोलन। गुरु के द्वारा प्रयाण व प्रयास। शनि के द्वारा प्रयाण या आदोलन तथा धनहानि या सतान से अलगाव। कुज के द्वारा ६ तक भलाई, तद्वारा विजय, बाद में धन हानि व आदोलन। रवि के द्वारा १६ तक धन हानि या धोखा खाना या नेत्रपीडा, बाद में धनप्राप्ति या पद। शुक्र के द्वारा धन प्राप्ति या नूतन वस्त्र या विजय व गौरव तथा अच्छे मित्रो की प्राप्ति। बुध के द्वारा २३ तक नूतन मित्र प्राप्ति लेकिन अपने बुरे प्रवर्तन के कारण डर बाद में धन प्राप्ति होने पर भी अगौरव।

तुला
(चित्त पाद-३, ४, स्वाति, विशाख पाद-१, २, ३)

राहु के द्वारा धन प्राप्ति। शनि के द्वारा ३ तक आदोलन। गुरु के द्वारा धन प्राप्ति।

कुज के द्वारा धन व विजय प्राप्ति। रवि के द्वारा १६ तक धन हानि, प्रयाण व प्रयास या उदर पीडा, धोखा खाना या नेत्र पीडा व धन हानि, शुक्र के द्वारा भलाई, तद्वारा धन प्राप्ति, गौरव, वस्तु, समृद्धि या खाद्य पदार्थ या नौकरी में गौरव, या सतान प्राप्ति। बुध के द्वारा बुराई, तद्वारा अगौरव या बुरे सलाह के कारण धन हानि।

वृश्चिक

(विशाख पाद-४, अनुराधा ज्येष्ठ.)

राहु के द्वारा झगडे। गुरु के द्वारा धन हानि। शनि के द्वारा धन प्राप्ति व श्रृंगार। कुज के द्वारा ६ तक बुराई, तद्वारा धन हानि या अगौरव, बाद में धन प्राप्ति व विजय। रवि के द्वारा धन हानि, १६ के बाद प्रयाण या उदर पीडा या धन हानि। शुक्र के द्वारा भलाई, तद्वारा श्रृगार, धन प्राप्ति, खाद्य पदार्थ गौरव या सतान प्राप्ति। बुध के द्वारा बुराई, तद्वारा अगौरव या अस्वस्थता।

धनुः

(मूल, पूर्वाषाढ, उत्तराषाढ पाद-१)

राहु के द्वारा अधार्मिक प्रवर्तन। शनि के द्वारा धनहानि व अगौरव। गुरु के द्वारा धन प्राप्ति, विजय या खाद्य पदार्थ। कुज के द्वारा ६ तक धन हानि या अगौरव या शारीरक घाव, बाद में धन हानि या अगौरव। रवि के द्वारा १६ तक स्वस्थता, गौरव, विजय या धन प्राप्ति, बाद में स्तब्धता। शुक्र के द्वारा श्रृगार, नूतन वस्त्र या धन प्राप्ति। बुध के द्वारा २३ तक बुराई, तद्वारा शत्रुओ के कारण आदोलन, या अगौरव वा अस्वस्थता, बाद में धन प्राप्ति, श्रृगार या वाहन या सतान प्राप्ति।

मकर

(उत्तराषाढ पाद-२, ३, ४. श्रवण, धनिष्ठ पाद १, २)

राहु के द्वारा आदोलन। गुरु के द्वारा अस्वस्थता या प्रयाण व प्रयास। शनि के द्वारा झगडे, या अस्वस्थता या पापकार्य। कुज के द्वारा ६ तक पत्नी को असतोष, नेत्र पीडा या उदरपीडा, बाद में धन हानि या शारीरक घाव, या अगौरव। रवि के द्वारा भलाई, तद्वारा स्वस्थता, गौरव व विजय। शुक्र के द्वारा नये मित्र, नूतन वस्त्र व धन प्राप्ति। बुध के द्वारा धन प्राप्ति व विजय या श्रृगार या वाहन या सतान प्राप्ति।
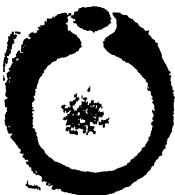
कुंभ

(धनिष्ठ पाद-३,४, शतभिष, पूर्वभाद्रा पाद-१, २, ३.)

राहु के द्वारा झगडे। गुरु के द्वारा श्रृगार। शनि के द्वारा सतान से अलगाव। कुज के द्वारा ६ तक भलाई, तद्वारा धन प्राप्ति, विजय व स्वस्थता, बाद में पत्नी से झगडे या नेत्रपीडा या उदर पीडा। रवि के द्वारा १६ तक धन हानि, अगौरव, बाद में विजय व गौरव। शुक्र के द्वारा २३ तक झगडे या अगौरव, बाद में धन प्राप्ति या नूतन वस्त्र या अच्छे मित्र। बुध के द्वारा २३ तक धन प्राप्ति, विजय या श्रृगार, बाद में अगौरव।

मीन

(पूर्वभाद्र पाद-४, उत्तराभाद्र, रेवती)

राहु के द्वारा धन प्राप्ति। गुरु के द्वारा मानसिक अशाति। शनि के द्वारा प्रयाण। कुज के द्वारा ६ तक सतान के कारण या अस्वस्थता के कारण या शत्रुओ के कारण आदोलन, बाद में विजय व धन प्राप्ति। रवि के द्वारा १६ तक अस्वस्थता या पत्नी को असतोष, बाद में धन हानि या निराशा या अस्वस्थता। शुक्र के द्वारा २३ तक भलाई, तद्वारा धन प्राप्ति या धार्मिक प्रवर्तन या नूतन वस्त्र, बाद में झगडे या अस्वस्थता। बुध के द्वारा २३ तक निराशा, बाद में धन प्राप्ति, विजय या नूतन वस्त्र या सतान प्राप्ति। ☆

ग्रहकों से निवेदन

निम्नलिखित संख्यावाले ग्राहकों का चदा ३१-१२-७९ को खतम हो जायगा। कृपया ग्राहक महोदय अपना चंदा रकम मनीआर्डर के द्वारा जल्दी ही भेज दें।

H 1, 3, 11, 1 , 13, 23, 30, 31, 49, 52, 141, 144 to 53, 155 to 159, 169

निम्नलिखित पते पर चदा रकम भेजें :

संपादक,
ति॰ ति॰ देवस्थानम्,
तिरुपति.

पृष्ठ ३८ का शेष

नवरात्रि महोत्सव :

तिरुचानूर के श्रीपद्मावती देवी के मंदिर मे बेंगुलूर के निवासी श्री ओ.जी. राजुलु के आध्वर्य में नवरात्रि महोत्सव २२, सितंबर से लेकर १, अक्तूबर तक अति वैभव से मनाया गया। उक्त अवसर पर हर शाम ४-३० बजे से लेकर ७-३० बजे तक देवी को विशेष तिरुमंजन, अलकार, बाद में वेदपारायण किया गया। रात के ८बजे से लेकर ११ बजे तक हर रोज मंदिर के प्रांगण में सगीत नृत्य कायक्रमो का प्रबंध किया गया। पी. सीतारामजी से फ्लूट कचेरी, कु. वीणामूर्ति जी से कूचिपूड़ि नृत्य, श्रीमति जया कृष्णन् बृंद से गात्र संगीत, श्री सी. कृष्णमूर्ति बृंद से वीणा कचेरी, श्री बी. राजप्पा बृंद से क्लारिनेट कचेरी इन उत्सवों का विशेष आकर्षक हैं। विद्युदीपालंकृत श्री देवी जी के मंदिर की शोभा नेत्रानंददायक है। ★

EDITED AND PUBLISHED ON BEHALF OF THE T. T. DEVASTHANAMS BY K. SUBBA RAO, M.A. AND PRINTED AT T. T. D. Press, By M. Vijayakumar Reddy, Manager T. T. D Press, Tirupati

दिनांक ६, अक्तूबर, ७९ को हैदराबाद में आन्ध्र प्रदेश के माननीय मुख्यमत्री डा० चेन्ना रेड्डी महोदय के द्वारा उद्‌घाटन किया गया। उस सभा में भाषण देते हुए मुख्यमत्री महोदय।

माननीय मुख्यमंत्री डा० चेन्नारेड्डीजी श्रीमती एम. एस सुब्बुलक्ष्मी से बातचीत करते हुए.

एच. एम. वी. (हिज मास्टर्स वाइस) ग्राम-फोन रिकार्ड कपेनी के द्वारा सन्मानित प्रमुख गायनी श्रीमती एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी जी।

मानव - माधव सेवाओं में युक्त कलियुग वैकुण्ठ सेवा

श्री बालाजी के दर्शन के लिए तिरुमल आनेवाले यात्रियों को अन्न प्रसाद वितरण की योजना

- [illegible] निगम आगम सहित आराधना किये जानेवाले एकैक मंदिर, श्री बालाजी का मंदिर है। [illegible] विशेष [illegible] पर ४० या ६० हजारों के बीच और अन्य साधारण दिनों में २० या २५ हजारों के बीच [illegible] करनेवाला [illegible] क्षेत्र है।

- कलियुग में कल्पवृक्ष [illegible] एक, आराध्य देवमूर्ति श्री बालाजी हैं। हजारों भक्त, गरीब लोग अपने पास रहे पूरे धन को खर्च करके श्री वारि दर्शन के लिए पहाड़ को पैदल चलकर आते हैं। फिर लौट जाते समय अपने साथ श्री वारि प्रसाद को ले जाकर अपने मित्रों को भी बांटने की इच्छा रखना सर्वसाधारण है।

- ऐसे गरीब लोगों को यदि प्रसाद मुफ्त में बांट दिया जाये तो उससे बढ़कर और कोई सेवा भी नहीं होती।

- इस उद्देश्य से ही देवस्थान ने मध्य वर्गीय परिवारों को भी इस धर्म कार्य में भाग लेने के अनुकूल एक योजना बनाया। इसके मुख्यांश ये हैं —

- श्री वेंकटेश्वर नित्य प्रसाद वर्षादाय योजना के नाम पर चलनेवाले इस कार्यक्रम में रु. ५०० चुकाकर कोई भी भाग ले सकते हैं। इस रकम को बैंक में मूल धन के रूप में जमा कर दिया जायगा। उस पर हर साल आनेवाली सूद रु. ४५ से हर साल ७० लड्डू या ५४ बड़े या २० भात की पोटलियाँ उनके बताये दिन पर गरीब यात्रियों को बाँट दिये जायेंगे।

- यह शाश्वत निधि होने के कारण सिर्फ एक बार जमा करें तो, निरंतर सूद आती रहती है। दाताएँ अपनी पसंद की तिथि बतायें तो उसी दिन दाता के नाम पर या उसके द्वारा बताये गये अन्यों के नाम पर इस प्रसाद का वितरण किया जायगा।

- उस निर्णीत दिन के सुबह स्वामीजी के दर्बार में उस दाता के नाम तथा गरीब यात्रियों को प्रसाद वितरण करने के बारे में निवेदन कर दिया जायगा।

- इस प्रकार रु. ५०० की पद्धति पर एक ही व्यक्ति कई दिनों का भी इंतजाम कर सकता है।

- इस प्रकार बीस निधियाँ या एक ही दिन के लिए रु. १०,००० को दिये तो निर्णीत दिन पर सपरिवार उस कार्यक्रम को आ सकते हैं और भगवान बालाजी का भी दर्शन कर सकते हैं।

* इस योजना के लिए निधि स्वीकार करना तुरंत ही शुरू होती है। प्रसाद वितरण १९८० साल में आनेवाली युगादि में शुरू किया जायगा।

* श्री वारि दर्शन के लिए आनेवाले यात्रिक गणों में अति गरीब लोगों की सेवा में बिना तरतम भेद के सभी लोग शामिल होकर भगवान बालाजी के शुभासीस प्राप्त करने का अपूर्व मौका है।

* मानव सेवा तथा माधव सेवा के रहने के कारण दुगुना पुण्य कमाने की इस अपूर्व मौके को हर एक भक्त उपयोग करें तथा हमारा निवेदन है कि आप इस योजना के लिए दान भेजें।

* इस योजना को दिये जानेवाले रकम पर आयकर से भी छूट प्राप्त कर सकते हैं।

तिरुमल - तिरुपति देवस्थान, तिरुपति.